# राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 31 अंक : 4 जुलाई – अगस्त 2008

## दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव

# एबीवीपी ने फहराया भगवा परचम

26 एवं 27 जुलाई को हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार –
' वैश्वीकरण एवम् महिलायें – प्रभाव, चुनौती, अवसर '

बांग्लादेशी घुसपैठ विरोधी आन्दोलन – विशाल प्रदर्शन – कोलकत्ता

**Candlelight protest at Chandigarh against terrorism and the recent serial bomb blasts.**

**Collectorate March at Palakkad (Kerala) against the preaching of Communism in school textbooks**

राष्ट्रीय
# छात्रशक्ति
शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संरक्षक
अतुल कोठारी

संपादक
डा. मुकेश अग्रवाल

प्रबंध संपादक
नितिन शर्मा

संपादक मंडल
संजीव कुमार सिन्हा
आशीष कुमार 'अंशु'
उमाशंकर मिश्र

फोन : 011-23093238, 27662477
E-mail : chhathrashakti@gmail.com
Website : www.abvp.org

मूल्य : एक प्रति रुपए 10/-

डा. संजीत ठाकुर द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी-50, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली-110007 के लिए प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस, 119, डीएसआईडीसी कॉम्प्लेक्स, ओखला, फेज-1, नई दिल्ली-20 द्वारा मुद्रित

## विषय सूची

7 छात्रशक्ति की जीत

9 आजादी का आह्वान

श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति का जनांदोलन सफल 13

दुआ करो – ये आवाज दूर तक पहुंचे 15

19 राष्ट्रीय स्वायत्त शिक्षा आयोग

23 हमारा व्यक्तित्व

**मुलाकात**

डा. पायल मग्गो – राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अभाविप ..... 17

**परिचर्चा**

बांग्लादेशी घुसपैठ – एक राष्ट्रीय संकट ..... 21

परिषद् गतिविधियां ..... 25

**वैधानिक सूचना** : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखकों के हैं। सम्पादक, प्रकाशक, एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

# ABVP Demands Stern Action against Terrorism

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) strongly condemns serial bomb blasts in Ahmedabad and Bangaluru. ABVP expresses deep sympathy towards the victims of these blasts. ABVP General Secretary Shri Suresh Bhatt, in a press release, has condemned that repeated terrorist activities in different parts of India including Kashmir, Jaipur, Bangaluru and Ahmedabad have shown that terrorist have no fear in conducting bomb blasts to kill innocent Indians.

ABVP feels that terrorists need to be taught a tough lesson in their own Language. ABVP demands that Central Government needs to give up its soft approach and take a strong action against terrorists. Further the elements nurturing anti Indian extremism should be identified and dealt firmly. Bangladeshi terrorist groups like HUJIhave been involved in these activities in past few months.

Illegal infiltration from Bangladesh is on rise and has become a serious threat to the National security. Inadequate security measures have made Bangladeshi border a free gateway for the terrorists. Further Bangladeshi infiltrators are actively nurturing and supporting terrorism. It is very easy for terrorists to conduct terrorist activities in India and go back to Bangladesh. Bangladeshi terrorism has become a serious challenge to the National Security.

ABVP demands central and State Governments to identify Bangladeshi infiltrators remove those electoral rolls and depart them immediately. ■

# Students Injured in Lathi Charge in Patna

ABVP activists marched to the residence of Bihar education minister Hari Narayan Singh to protest against the government failure to end the strike of non-teaching staff of universities and colleges in the state. Varsity and college staff has been on a strike for more than 40 days to press for their demands related to salary. ABVP activists reached the minister's residence and sought an audience with him. As reported, the security guards deputed outside the house of the minister on Daroga Rai Path first tried to chase the protestors from the premises. When that did not go well, authorities used force to drag the students away from the minister's house further angering the protestors.

The ABVP state treasurer Akshay Kumar said, "Private security personnel of the minister attacked us with iron rods and sticks when we sought a meeting with him." Kumar said the ABVP has been trying to seek an appointment with the minister for the last 15 days. Having failed in its efforts, we decided to meet the minister without an appointment. Seven of the ABVP members were injured in the incident. Three of them had to be hospitalised at Patna Medical College and Hospital (PMCH). ABVP has decided to launch a state-wide agitation demanding immediate removal of the education minister. "Our workers will organise a dharna and burn the effigy of the minister to press for the demand," Akshay said.

Leader of opposition Rabri Devi has demanded the resignation of the minister for the incident.

# आतंकवाद को नेस्तनाबूद करो

13 मई को जयपुर में बम धमाके हुए....25 जुलाई को बेंगलुरू थर्रा उठा....और अब 26 जुलाई को अहमदाबाद दहल उठा। विगत तीन महिने में तीन भयानक आतंकी हमला। अहमदाबाद में एक के बाद एक हुए 17 क्रमिक बम विस्फोटों में 50 से अधिक लोगों की मौतें हुई जबकि 150 से ज्यादा लोग घायल हुए। मणिनगर, इसनपुर, बापूनगर, हाटकेश्वर, सरनागपुर ब्रिज, सरखेज, रायपुर, जुहापुर, कुरियर मन्दिर आदि इलाकों में तबाही का मंजर था। बसों, साइकिलों, मोटरसाइकिलों के परखच्चे उड़ गए बापू की धरती खून से लाल हो गई। आखिर कब तक यह सिलसिला चलता रहेगा? कब तक बेगुनाहों की लाशें ढ़ेर होती रहेंगी? कब तक हमारी सरकारें कुंभकर्णी नींद में सोयी रहेंगी? कब तक नेताओं के तोतारटंत बयानों की रस्म अदायगी होती रहेंगी? ""हम आतंकी हमला बर्दाश्त नहीं करेंगे", "हम आतंकवादियों को नहीं छोड़ेंगे", "आतंकवाद को जड़ समेत उखाड़ फेकेंगे", "आतंकवाद मानवता का दुश्मन है"। देश के गृहमंत्री को अब ये प्रलाप बंद कर देना चाहिए। बहुत हो चुका।

गौरतलब है कि भारत में आतंकवाद का प्रमुख स्रोत पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई और बंगलादेशी घुसपैठिए हैं। तथाकथित सेकुलर दलों द्वारा वोट-बैंक की राजनीति के चक्कर में बंगलादेशियों को झुग्गी-झोपड़ियों में बसाने, उन्हें राशन कार्ड और मतदाता पहचान पत्र दिलवाने के गंभीर खामियाजा देश को भुगतने पड़ रहे हैं। अब आतंकवाद केवल जम्मू-कश्मीर तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे देश में यह पैर पसार चुका है। आतंकवाद की आग में दक्षिण के राज्य सुलग रहे हैं। पूर्वोत्तर जल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानों पूरा देश बारूद के ढ़ेर पर बैठा है। याद रहे कि इस समय पूरी धरती पर इराक के बाद भारत में ही सबसे अधिक आतंकवादी हमले हो रहे है। गौर करने वाली बात है कि अब तक भारत में हुए आतंकवादी हिंसा में 70,000 से अधिक बेगुनाहों के प्राण चले गए, जबकि पाकिस्तान तथा चीन के साथ जो युद्ध हुए हैं, उनमें 8,023 लोगों की मौतें हुई। अमेरिका के राज्य विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर और नक्सलवादियों द्वारा किए गए आक्रमणों में सन् 2007 में कुल 2,300 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है।

आतंकवाद घृणित मानसिकता की उपज है। यह कायराना कृत्य है। अब यह कहना कि अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी आतंकवाद का कारण है, बेमानी हो चुका है। आज का आतंकवादी शिक्षित है, कंप्यूटर योग्यता वाला है और संपन्न परिवार से ताल्लुक रखनेवाला है। आतंकवादियों का कोई मजहब नहीं होता। लेकिन यह दुर्भाग्य है कि हूजी, सिमी, लश्कर-ए-तोयबा आदि आतंकी संगठन जिहाद के नाम पर इस्लाम को बदनाम करने पर तुले हुए है। आतंकवाद से निपटने में संप्रग सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव दिखता है। इस सरकार ने सत्तासीन होते ही सबसे पहला काम यही किया कि आतंकवाद विरोधी कानून पोटा को वापिस ले लिया। उसके बाद से आतंकवादियों का दुस्साहस लगातार बढ़ता ही जा रहा है। पोटा कानून लागू होना समय की मांग है। लगातार हो रहे आतंकी हमलों ने भारतीय खुफिया तंत्र की कार्य-प्रणाली को भी कठघरे में खड़ा कर दिया है। राजनेताओं की भी अजीब कहानी है। विपक्ष में होते है तो आतंकवाद के विरूद्ध आग उगलते है और सत्ता में आते ही मानो उन्हें सांप सूंघ जाता है।

अभी थोड़े दिन नेताओं के बयानों के दौर चलेंगे। सत्ता पक्ष और विपक्ष आरोप-प्रत्यारोप में उलझेंगे। हमारी खुफिया एजेंसी थोड़ी सक्रियता दिखाएगी और चंद दिनों के बाद सब कुछ ठंडा पड़ जाएगा। कब जागेंगे हम? कब यह देश आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देगा? कब पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एक साथ उठ खड़ा होगा? आज देश के नियंताओं और नागरिकों के सम्मुख यह यक्ष प्रश्न मुंह बाएं खड़ा है। ■

# It is the victory of ABVP

**Will you call it the victory of ABVP, or is it your personal victory?**

Definitely it is the victory of Parishad (ABVP). As far as organisations are concerned both (NSUI & ABVP) are strong. It also depends on which candidate is liked by the students.

**Why do you think NSUI could not make it for the fourth time, to the DUSU president's post?**

May be they could not convince the students about their programmes. I have been there for five years in the campus and that helped better associate with the students.

**What was the biggest factor that worked in your favour?**

The biggest factor was my association with ABVP.

**How long has been your association with ABVP?**

Since 2003, I am a member of the ABVP but not an activist in the real sense of the word.

**Whom would you like to attribute your success to?**

I would like to attribute my success to the students who elected me. I would like to thank those who believed in me.

**Why do you think was the voter turnout very low in these elections? Is it because students have no love lost for the elections?**

Students are not loosing the interest in the elections. On the contrary, they are losing faith in the system. It may be because DUSU have not been able to work, according to the expectations of the students. I am going to work for students and not for myself.

**Out of so many things you have promised to the students what is the first thing, which you are going to fulfil?**

For the beginning, I have kept a box for the Bihar relief fund. We are all aware of the tough times that flooded areas of Bihar are facing and we, as students, would like to show our solidarity with our brethren there.

On the first day of our initiative we have collected around Rs 1100 to Rs 1200. I would myself like to go to Bihar. School of Delhi Social Work (DSW) has already started collecting clothes, which would be distributed among the flood victims.

**How was your first day at the office?**

It felt nice to take charge of DUSU office. But, what surprised me was the Almirah in my office had no files. I checked all the drawers and found that there is no stationery for me to use. First of all, I will get the office in shape. I was also looking for the audit reports, because I want to know how the money allocated to DUSU has been used.

I will also like to see if the UGC money is properly utilised.

But frankly speaking, holding the post of DUSU president is more responsibility than fun.

## दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ (डूसू) चुनाव

# छात्रशक्ति की जीत

– उमाशंकर मिश्र –

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद छात्रों को भविष्य का नहीं, अपितु समकालीन बौद्धिक वर्ग का हिस्सा मानती है। यही कारण है कि विद्यार्थी परिषद के कार्यों की परिधि आम छात्र संगठनों से काफी ज्यादा विस्तृत है । इस बात की झलक परिषद कार्यकर्ताओं के व्यावहार में भी देखने को मिलती है। हाल ही में संपन्न हुए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ (डूसू) चुनावों को ही लीजिए, जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की नुपुर शर्मा को छात्रसंघ अध्यक्ष के तौर पर चुना गया है। लम्बे अंतराल के बाद अध्यक्ष की कुर्सी पर किसी विद्यार्थी परिषद के प्रत्याशी का चुनकर आना कोई समान्य घटना नहीं है। इसके पीछे छिपे पहलुओं पर गौर करना आवश्यक हो जाता है। चुनाव प्रचार के दौरान जब विद्यार्थी परिषद के प्रत्याशी दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में जाकर प्रचार कर रहे थे तो छात्रों से बड़ी ही अजीबो–गरीब प्रतिक्रिया मिल रही थी। छात्रों से मिल रही इन प्रतिक्रियाओं पर गौर करना अनिवार्य हो जाता है। जैसा कि विद्यार्थी परिषद की ओर से सचिव पद की प्रत्याशी अनुप्रिया यादव ने बताया कि जब हम छात्रों से मिलने के लिए जाते हैं तो वे साफ तौर पर कांग्रेस की शह पर चलने वाले पूर्व छात्रसंघ अधिकारियों की खिलाफत करते हुए कहते हैं कि 'वे स्टूडेंट्स को रिझाने के लिए बड़ी–बड़ी पार्टियों से सिर्फ एक दिन के एन्टरटेनमेंट से अधिक कुछ नहीं देते हैं और फिर चुनाव जीतने के बाद एनएसयूआई के प्रतिनिधी कॉलेज कैम्पसों में कभी नजर नहीं आते। छात्र सीधे तौर पर यह कहते थे कि – वी वान्ट चेंज दिस टाईम'। यह पीड़ा दिल्ली विश्वविद्यालय के सिर्फ एक छात्र की नहीं थी, बल्कि हजारों छात्रों के स्वर इसी तरह के थे, जिसके परिणामस्वरूप एनएसयूआई को अध्यक्ष पद से हाथ धोना पड़ गया।

यह जीत सिर्फ विद्यार्थी परिषद की नहीं थी, यह जीत थी विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रवादी विचारधारा की । यह जीत उस विचारधारा की थी, जिसके बूते परिषद ने 16 लाख सदस्यों का प्यार एवं सहयोग हासिल किया है। सामाजिक दर्शन की छाप विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं में देखने को मिलती है, जिसका प्रतिरूप डूसू चुनावों में भी देखने को मिलता है। प्रचार के लिए 10 दिन की छोटी सी अवधि और 51 कॉलेजों के साथ साथ अनेक छात्रावासों में भी जाकर छात्रों से सम्पर्क करना था। वह भी ऐसे समय में जब लिंगदोह समिति की सिफारिशों के चलते चुनाव प्रचार पर अनेक तरह के प्रतिबंध लगे हुए थे। लेकिन विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने ऐसे समय में भी अपना धैर्य नहीं खोया और लिंगदोह समिति के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए कम से कम राशि में चुनाव प्रचार की चुनौती को स्वीकार किया। इस कड़ी में परिषद कार्यकर्ताओं ने गाड़ियों का मोह नहीं किया और रिक्शे पर बैठकर चुनाव प्रचार के लिए निकल पड़े। इतने पर भी परिषद के प्रत्याशियों ने दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिक से अधिक छात्रों तक अपनी बात पहुंचाने में सफलता हासिल कर ली। इतनी व्यस्तता के बावजूद परिषद के कार्यकर्ता, अधिकारी और प्रत्याशी बिहार में कोसी के कहर के शिकार लोगों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना नहीं भूलते हैं। शायद तभी वे एकजुट होकर मोमबत्तियां जलाकर पीड़ितों की संवेदना को साझा करने लगते हैं। और यह सिलसिला सिर्फ चुनाव तक ही नहीं ठहर जाता, बल्कि जब नुपुर शर्मा आज जब अध्यक्ष बन चुकी हैं तब भी उनकी पहली प्राथमिकता बिहार पीड़ितों को राहत पहुंचाने को लेकर ही है। किसी छात्रनेता का इस तरह की विकट परिस्थिति में गंभीरतापूर्वक कदम उठाने की घटनाएं शायद ही देखने को मिलती होंगी। उल्लेखनीय है कि पहले ही दिन जब नुपुर शर्मा ने छात्रसंघ

अध्यक्ष की कुर्सी संभाली तो उन्होंने सभी कॉलेजों में दानपेटियां लगवाकर छात्रों से बिहार पीड़ितों के लिए सहयोग करने की अपील की। साथ ही उन्होंने छात्राओं के साथ हो रहे दुर्व्यवहार पर चिंता जाहिर करते हुए काम्पैक्ट कैम्पस की बात को भी दोहराया है।

इसके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय का छात्रसंघ चुनाव अन्य कई मायनों में भी इस बार महत्वपूर्ण रहा। एबीवीपी ने जिस तरह से हाईटेक प्रचार को अपना अस्त्र बनाया उससे न केवल विरोधियों के हौसले पस्त हो गए बल्कि दूसरी ओर परिषद् के कार्यकताओं का उत्साह भी दोगुना हो गया था। यहां तक कि मीडिया में भी इस हाईटेक प्रचार की खूब चर्चा हुई और कुछेक अखबारों ने तो एबीवीपी के चुनाव प्रचार की तुलना अमेरीकी राष्ट्रपती चुनाव से करनी शुरु कर दी। हुआ यों कि इस बार लिंगदोह समिति की सिफारिशों के चलते पोस्टर, बैनर, होर्डिंग और यहां तक कि वाहनों के प्रयोग को भी एक हद तक प्रतिबंधित कर दिया गया था। परिषद् के रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने इस समस्या को सुलझाने में बहुत अधिक समय नहीं लगाया। दिल्ली के 6 महादेव रोड पर स्थित चुनाव कार्यालय में दो कम्पयूटर लगाए गए और करीब आधा दर्जन कार्यकर्ताओं की टीम दिन रात इस काम में जुटी रही। पत्रकार वार्ता में जब www.abvpdusu.blogspot.com नाम के ब्लॉग के बारे में पत्रकारों को बताया गया तो अगले ही दिन चुनाव कार्यालय पर विद्यार्थी परिषद् के इस अनूठे प्रयोग को सबसे पहले प्रकाशित करने के लिए मीडियाकर्मियों का तांता लग गया। इलैक्ट्रानिक मीडिया के कैमरे तो उस कमरे में लग गए जहां से इस सारे कार्य को अंजाम दिया जा रहा था। इसमें लगातार दो हते तक कार्यकर्ताओं का निस्वार्थ जुटे रहना और इस तरह के मुकाम तक चुनाव प्रचार को पहुंचाने की बात गौर करने वाली है जो विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं की निष्ठा एवं उनकी संगठन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस तरह की भावना अन्य छात्र संगठनों के लिए एक सबक हो सकती है।

विद्यार्थी परिषद् की विचारधारा एवं दृष्टिकोण को महत्व देने वाली नुपुर शर्मा फिलहाल दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ की अध्यक्ष बन चुकी हैं। वे कहती हैं कि एबीवीपी छात्रों के व्यक्तिक, सामाजिक और अकादमिक विकास को लेकर जिस तरह से काम करती रही है, वे उस धारा को आगे बढ़ाने का कार्य करती रहेंगी। ■

# संकट की घड़ी में पूरा देश बिहार व यूपी के साथ : अभाविप

बिहार व उत्तर–प्रदेश में आई प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न संकट की घड़ी में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित सेंट्रल पार्क में मोमबत्तियां जलाकर बाढ़ पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और केन्द्र सरकार से बाढ़ पीड़ितों को शीघ्र राहत पहुंचाने और बाढ़ में फंसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की अपील की। साथ ही समाज के लोगों को आह्वान किया कि वे मानवता के नाते बाढ़ पीड़ितों तक हर प्रकार सहायता कार्य में सहयोग करें।

इस कार्यक्रम में विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार शर्मा, प्रदेश मंत्री सुश्री निहारिका शर्मा, परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्रीनिवास, डूसू अध्यक्ष नूपुर शर्मा, अनुप्रिया यादव, वासु रूख्खड और मुकेश शुक्ला के अतिरिक्त भारी संख्या में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने मोमबत्तियां जलाकर प्राकृतिक आपदा से जूझ रहे बिहार व उत्तर – प्रदेश के लोगों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की। ■

# आजादी का आह्वान

– संजीव कुमार सिन्हा –

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने 1947 में 14–15 अगस्त की मध्यरात्रि में 'भारत की नियति के साथ मिलन' का संदर्भ देते हुए कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही हमें एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण के लिए काम करना होगा, जहां प्रत्येक बच्चे, महिला और पुरूशों को बेहतर स्वास्थ्य, भोजन, शिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध हों।

15 अगस्त स्वाधीनता दिवस हैं। यह हमें प्रेरणा और आत्मवलोकन का अवसर प्रदान करता है। भारत की आजादी के 61 वर्ष बीत गए। क्या पं नेहरू के उक्त संकल्प की दिशा में देश विकास की ओर अग्रसर है? आज विकास की दो दिशाएं दिखाई पड़ती है। एक है– इंडिया का विकास और दूसरा है– भारत का विकास। 'इंडिया' की अगुआई अंग्रेजियत में रंगे नौकरशाह, राजनेता, पूंजीपति और शहरी वर्ग के लोग कर रहे हैं, वहीं 'भारत' में समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े देश के 75 फीसदी गरीब, जो गांवों में रहते हैं, शामिल है।

**लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने लोगों में सामाजिक एकता की भावना को प्रबल करने के लिए 'गणेश उत्सव' का शुभारंभ किया। महर्षि अरविंद ने सनातन धर्म को राष्ट्रवाद से जोड़ा। गांधीजी ने सदैव धर्म के महत्व को रेखांकित किया। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन ने छद्म पंथनिरपेक्षता को धराशायी किया। इसी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा का सहयात्री बनने से हम भारत को विश्व का सिरमौर बना सकेंगे।**

'इंडिया' में लगातार बढ़ रहे 36 अरबपतियों की संख्या समाहित हैं तो 'भारत' में 77 करोड़ लोग, जिनकी आमदनी प्रतिदिन 20 रुपए से भी कम है, शामिल है। असमानता की खाई इस कदर चौड़ी हो रही है कि भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर श्री विमल जालान कहते है कि भारत के 20 सबसे अधिक धनवानों की आय 30 करोड़ सबसे गरीब भारतीयों से अधिक है। यही विषमता आज भारत की मुख्य समस्या है।

आंकड़ों पर नजर दौड़ाएं तो देश के सामने अनेक चुनौतियां मुंह बाएं खड़ी हैं। दुनिया भर में सबसे अधिक अरबपतियों की संख्या के हिसाब से भारत चौथे स्थान पर है। वहीं ग्लोबल हंगर इंडेक्स में हम 94वें स्थान पर हैं। 11वीं पंचवर्षीय योजना के मुताबिक 2004–05 में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत 27.8 अनुमानित था। लोगों की आय, स्वास्थ्य, शिक्षा के आधार पर तैयार किए जाने वाले मानव विकास सूचकांक में 2004 में 177 देशों की सूची में भारत का स्थान 126 वां था।

हमारी आबादी का दो–तिहाई हिस्सा अभी भी खेती पर ही आश्रित है लेकिन सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 20 प्रतिशत से भी कम हो गया है। 38 मीलियन हेक्टेयर क्षेत्र पर हम आज भी खेती नहीं करते, जबकि इस जमीन पर जोत संभव है। गौरतलब है कि 38 मीलियन हेक्टेयर क्षेत्र पाकिस्तान, जापान, बांग्लादेश और नेपाल के

कुल सिंचित क्षेत्र से भी ज्यादा है।

भारत सरकार का वर्ष 2007–2008 का आर्थिक सर्वेक्षण कहता है कि 1990 से 2007 के दौरान खाद्यान्न उत्पादन 1.2 प्रतिशत कम हुआ है, जो कि जनसंख्या की औसतन 1.9 प्रतिशत वार्षिक बढ़ोत्तरी की तुलना में कम है। इसके फलस्वरूप मांग और आपूर्ति में भारी अंतर है, जिसकी वजह से खाद्य संकट की आशंका बराबर बनी रहती है। 1990–91 में अनाजों की खपत प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 468 ग्राम थी जो कि 2005–2006 में प्रतिदिन 412 ग्राम प्रति व्यक्ति हो गई है। केन्द्र सरकार यह बात स्वीकार कर चुकी है कि हर साल लगभग 55,600 करोड़ रुपये का खाद्यान्न उचित भंडारन आदि न होने के कारण नष्ट हो जाता है।

हालात ऐसे हो गए हैं कि कृषि प्रधान देश भारत में 40 प्रतिशत किसान, खेती छोड़ना चाहता है। पिछले 10 वर्षों में 80 लाख लोगों ने खेती–किसानी छोड़ी है। एक आकलन के अनुसार 85 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण परिवार या तो भूमिहीन, उपसीमांत, सीमांत किसान है या छोटे किसान है। भारत की आजादी के 61 वर्षों बाद भी लगभग 50 प्रतिशत ग्रामीण परिवार अभी भी साहूकारों पर निर्भर रहते हैं।

नेशनल सैम्पल सर्वे हमें बताता है कि किसानों की ऋणग्रस्तता पिछले एक दशक में लगभग दोगुनी हो गई है। देश के 48.60 फीसदी किसान कर्ज के तले दबे हुए हैं। हर किसान पर औसतन 12,585 रू. का कर्ज है। भारतीय किसान परिवार का औसत प्रति व्यक्ति मासिक खर्च 302 रुपए है। स्थिति की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1993 से अब तक करीब 1,12,000 किसान आत्महत्या कर चुके है।

आंकडे बताते हैं कि प्रति व्यक्ति मिलने वाला अनाज घट गया है। इसका असर व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी दिखाई देता है। वर्ष 2005–2006 में कराए गए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे में कहा गया है कि देश में 5 साल से कम उम्र के बच्चे शारीरिक रूप से अविकसित हैं और इसी उम्र के 43 फीसदी बच्चों का वजन (उम्र के हिसाब से) कम है। इनमें से 24 फीसदी शारीरिक रूप से काफी ज्यादा अविकसित हैं और 16 फीसदी का वजन बहुत ही ज्यादा कम है। देश में 15 से 49 साल की उम्र के बीच की महिलाओं का बॉडी मांस इंडेक्स (बीएमआई) 18.5 से कम है, जो उनमें पोषण की गंभीर कमी की ओर इशारा करता है और इन महिलाओं में से 16 फीसदी तो बेहद ही पतली हैं। इसी तरह देश में 15 से 49 साल की उम्र के 34 फीसदी पुरुषों का बीएमआई भी 18.5 से कम है और इनमें से आधे से ज्यादा पुरुष बेहद कुपोषित हैं। देश में कुपोषण के शिकार बच्चे की स्थिति के मामले में हमारा देश नीचे से 10 वें नंबर पर है।

सुगठित शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय विकास की धुरी होती है लेकिन देश में शिक्षा–व्यवस्था की हालत अच्छी नहीं है। भारत में 300 से ज्यादा विश्वविद्यालय हैं पर उनमें से केवल दो ही हैं जो विश्व में पहले 100 में स्थान पा सकें। सन् 2005 में विश्वबैंक के अध्ययन में पता चला था कि हमारे देश में 25 प्रतिशत प्राइमरी स्कूल के अध्यापक तो काम पर जाते ही नहीं हैं। पिछले दिनों नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन के एक सर्वेक्षण में यह पता चला कि इस देश के 42 हजार स्कूल ऐसे भी हैं, जिनका अपना कोई भवन ही नहीं है। देश के 32 हजार विद्यालयों में शिक्षक नहीं है। अमेरिका में कुल बजट का 19.9 प्रतिशत, जापान में 19.6 प्रतिशत, इंग्लैंड में 13.9 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाता है। जबकि भारत में शिक्षा पर बजट का मात्र 6 प्रतिशत भाग खर्च किया जाता है। शिक्षा पर केंद्र सरकार सकल घरेलू उत्पाद का 3.54 फीसद और कुल सकल उत्पाद का 0.79 फीसद खर्च करती है जबकि राज्य सरकारें 2.73 फीसद खर्च करती है। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्कूल जाने वालों में 40 प्रतिशत बच्चे अंडरवेट होते हैं और 42 प्रतिशत कुपोषण के शिकार। देश के 63 प्रतिशत बच्चे 10वीं कक्षा से पहले ही स्कूल छोड़

देते हैं। एक आकलन के मुताबिक भारत के मात्र 10 फीसद युवाओं को उच्च शिक्षा मिलती है जबकि विकसित राष्ट्रों के 50 फीसद युवाओं को उच्च शिक्षा मिलती है। विदेशों में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा ले रहे भारतीय छात्रों में से 85 फीसद वतन लौट कर नहीं आते।

इराक के बाद भारत सर्वाधिक आतंकवाद का दंश झेल रहा है। हाल ही में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने चिंता व्यक्त की कि देश में आतंकवादियों के 800 से ज्यादा ठिकाने है। भारत में अब तक हुए आतंकवादी हिंसा में 70,000 से अधिक बेगुनाहों के प्राण चले गए, जबकि पाकिस्तान तथा चीन के साथ जो युद्ध हुए हैं, उनमें 8,023 लोगों की मौतें हुई। गृह मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2007 में नवंबर के अंत तक नक्सली हिंसा की 1385 घटनाएं हुई, जिसमें 214 पुलिस कार्मिक व 418 नागरिक मारे गए, वहीं 2006 में 1389 घटनाएं हुई, जिसमें 133 पुलिस कार्मिक व 501 लोग मारे गए। इस समय माओवादियों का प्रभाव 16 राज्यों में है। देश के 604 जिलों में 160 जिले पर माओवादियों या नक्सलवादियों का कब्जा है। देश का 40 प्रतिशत भू–भाग नक्सलवादी हिंसा से प्रभावित है। पूर्वोत्तर की स्थिति चिंताजनक है। वर्ष 2007 में यहां 1489 हिंसक घटनाएं हुई, जिनमें 498 सामान्य नागरिक आंतकवादी हिंसा के शिकार हुए।

**इंडिया' में लगातार बढ़ रहे 36 अरबपतियों की संख्या समाहित हैं तो 'भारत' में 77 करोड़ लोग, जिनकी आमदनी प्रतिदिन 20 रुपए से भी कम है, शामिल है। असमानता की खाई इस कदर चौड़ी हो रही है कि भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर श्री विमल जालान कहते है कि भारत के 20 सबसे अधिक धनवानों की आय 30 करोड़ सबसे गरीब भारतीयों से अधिक है। यही विषमता आज भारत की मुख्य समस्या है।**

हमारी शासन प्रणाली मुकदमेबाजी को बढ़ावा दे रही है। भ्रष्टाचार का महारोग देश को आगे बढ़ने में बाधित कर रहा है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल संस्था के अनुसार दुनिया के 172 देशों में भारत भ्रष्टाचार के 72वें पायदान पर है। अलगाववादी प्रवृतियां राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रहा हैं। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण का विषवेल समाज को नुकसान पहुंचा रहा है। मीडिया के माध्यम से सहज ही पाश्चात्य संस्कृति का आक्रमण हो रहा है। जातिवाद, सामाजिक समरसता को छिन्न–भिन्न कर रहा है। घुसपैठ आंतरिक सुरक्षा को तार–तार कर रहा है। 2.5 करोड़ बंगलादेशी घुसपैठियों के कारण देश पर 90 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बोझ पड रहा है। 13 प्रतिशत को छू रही महंगाई की दर लोगों का जीना मुहाल कर रही है। वहीं बेरोजगारों की संख्या लगभग 25 से 30 करोड़ है। हर साल 3.5 से 4 करोड़ नए रोजगार ढूढने वाले जुड़ रहे है। इस गंभीर समस्या का निदान होना अत्यंत जरूरी है।

हर देश की अपनी अलग समस्याएं होती है। पाश्चात्य विचार के अनुगामी बनकर तो इसका समाधान कतई नहीं होगा। इसका उत्तर स्थानीय परिवेश में ही ढूढा जाना चाहिए। और ऐसा तब होगा जब देशवासियों के मन में स्वदेशी भावना प्रबल हो, वे अपने कर्तव्य और अधिकार के प्रति सचेत हों। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने लोगों में सामाजिक एकता की भावना को प्रबल करने के लिए 'गणेश उत्सव' का शुभारंभ किया। महर्षि अरविंद ने सनातन धर्म को राष्ट्रवाद से जोड़ा। गांधीजी ने सदैव धर्म के महत्व को रेखांकित किया। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन ने छद्म पंथनिरपेक्षता को धराशायी किया। इसी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा का सहयात्री बनने से हम भारत को विश्व का सिरमौर बना सकेंगे। अजीब विडंबना है कि आज के समय में ऐसी पहल करने वालों पर साम्प्रदायिक होने का आरोप मढ़ दिया जाता है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने विजन 2020 की अवधारणा देश के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा था कि वर्ष 2020 का भारत एक ऐसा देश हो, जिसमें ग्रामीण एवं शहरी जीवन के बीच कोई दरार न रहे। जहां सबके लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो और देश का शासन जिम्मेदार, पारदर्शी और भ्रष्टाचारमुक्त हो। जहां गरीबी, अशिक्षा का कोई अस्तित्व न हो और देश महिलाओं एवं बच्चों के प्रति होनेवाले अपराधों से मुक्त हो। राष्ट्रीय समृद्धि विरासत में नहीं मिलती, उसे बनाना पड़ता है। सिर्फ सरकार के भरोसे देश का विकास सुनिश्चित नहीं होगा। भारत आज एक युवा राष्ट्र है। इस समय 70 प्रतिशत से अधिक लोग 35 साल से कम उम्र के हैं। देश को समृद्धशाली बनाने की चुनौती युवाओं को स्वीकार करनी होगी, समस्याओं को कोसने के बजाए सार्थक हस्तक्षेप के लिए आगे आना होगा, तभी सही मायने में आजादी सार्थक होगी। ■

# वैश्वीकरण एवम् महिलायें - प्रभाव, चुनौती व अवसर

वैश्वीकरण ने हमारे जीवन को ही नही बल्कि समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इसका ज्यादा प्रभाव महिलाओं के ऊपर देखने को मिला है। जहाँ महिलायें विज्ञान, तकनीकी, कला व अन्य क्षेत्रों में भागीदारी निभा रही है, वही साथ ही वे घर–परिवार में अपनी परम्परागत भूमिका का निर्वाह भी कर रही है। परन्तु इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव महिला के ऊपर भी पड़ा है। अतः वर्तमान परिदृश्य में इस विषय पर एक गंभीर चर्चा हो, ऐसी आवश्यकता को महसूस करके अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने 26 एवं 27 जुलाई को हैदराबाद में ' वैश्वीकरण एवम् महिलायें – प्रभाव, चुनौती, अवसर ' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया । जिसमें 19 प्रांतों से 150 से ज्यादा प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा 68 से ज्यादा छात्र व शिक्षकों ने अपने विचार लिखित में व Paper Present कर प्रस्तुत किये ।

सेमिनार का उदघाटन Osmania विश्वविद्यालय के IPE. Hall में, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डॉ पुरनदरेश्वरी , तिरूपति महिला विश्वविद्यालय की उप कुलपति Prof. G. Sarojamma, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेश भट्ट, सुश्री गीता गुडे व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. पायल मॉगो ने दीप प्रज्जवल कर किया ।

सेमिनार की मुख्य अतिथि डी. पुरन्दरेश्वरी ने कहा, कि वैश्वीकरण के कारण महिलाओं को निश्चित रूप से मानसिक व शारीरिक तनाव का सामना करना पड़ रहा है, फिर भी वैश्वीकरण एक अवसर है जिसे पकड़ने में देरी नही करनी चाहिए । साथ ही इस चुनौती को संघर्ष स्वीकार कर आगे बढ़ना होगा। अपनी संस्कृति व अपनी पहचान को छोड़े बिना, इसे कैसे अपना सकते हैं, यह सोचना होगा । उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि इस धरती पर माँ की पवित्रता के बिना उद्धार सम्पन्न नही है। हम आँखों में आँसू भरी नारी के साथ विकास की यात्रा तय नही कर सकते हैं ।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री.सुरेश भट्ट ने विद्यार्थी परिषद के बारे मे बताते हुए कहा कि, वैश्वीकरण का अर्थ है – विश्व एक बाजार है, लेकिन विद्यार्थी परिषद का मानना है कि विश्व एक परिवार है , हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में अपनी आस्था व्यक्त करते हैं ।

सेमिनार में विशेष रूप से 4 Technical Sessions रहे जिसमें Ist Session आर्थिक प्रभाव विषय पर नागपुर की Prof. Shilpa Puranik, दिल्ली की Prof. Namita Rajput व हैदराबाद से Adv. Sundari R. Pisupati ने अपने विचार रखे । सत्र की अध्यक्षता Dr. Renu Mathur ने की ।

II Session - Socio - Cultural Impacts (सामाजिक – सांस्कृतिक प्रभाव) का रहा जिसमें JNU विश्वविद्यालय दिल्ली के Prof. Kapil Kapoor, राष्ट्रीय महिला आयोग की भूतपूर्व सदस्य Nirmala Sitharaman, हैदराबाद से Dr. Bharati Kulkarni, हैदराबाद से ही Prof. R. Usha Rani ने अपने विचार रखे व सत्र की अध्यक्षता Prof. N. Vijaya ने की ।

III Session - Media & Women का रहा जिसमें दिल्ली के आई.पी. कालेज से प्रो.विनिता गुप्ता ने अपने विचार रखे व हैदराबाद के P.G. College की Principal M. Vijaya Nirmal ने सत्र की अध्यक्षता की।

IV Session - Education Impacts का रहा जिसमें, पुणे विश्वविद्यालय के Prof. Santishree Pandit, Osmani University के Prof. V. Yoga Jyotsn ने विचार रखे तथा कर्नाटक State Women University, Bijapur के कुलपति Prof. Geetha Bali ने अध्यक्षता की।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि - M. Vijayalakshmi, Chief Judge, City Civil Court Hyderabad ने महिलाओं के संविधान में दिये गये अधिकारों व कानूनों के बारे में जानकारी दी । मुख्य वक्ता विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री.सुनील आम्बेकर ने बताया कि महिला – पुरूष समानता की बात होती है, वह विद्यार्थी परिषद में पहले से ही मौजूद है । उन्होने अपनी बात अनेकों उदाहरणों के माध्यम से रखी । ■

# श्रीअमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति का जनांदोलन सफल

— नरेन्द्र सहगल —

हिन्दू अस्मिता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा के लिए श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन को अंतत: प्रभावी विजय मिली। यह हिन्दुत्व और राष्ट्रवादी शक्तियों की पाकिस्तान प्रायोजित देशद्रोही अलगाववादियों पर ऐतिहासिक विजय है। जम्मू के देशभक्त लोगों ने दो महीने तक निरंतर भूखे-प्यासे रह कर जिस संगठित शक्ति का परिचय दिया है, उससे समस्त देश की राष्ट्रवादी शक्तियों को दिशा मिली है।

यदि देश के एक छोटे से भाग जम्मू के हिन्दू अपने मुसलमान, ईसाई और सिख भाइयों को साथ लेकर अलगाववादियों को चुनौती देते हुए, सरकार को झुका सकते हैं, तो निश्चित ही पूरे भारत के देशभक्त लोग मिलकर उन अराष्ट्रीय तत्वों को चुनौती दे सकते हैं, जो आई.एस.आई. जैसे विदेशी संगठनों के इशारे पर भारत को तहस-नहस करने के षडयंत्र रच रहे हैं। जम्मू के लोगों ने अपनी कुर्बानियां देकर यह भी सिद्ध कर दिया है कि यदि भारत का 85 प्रतिशत हिन्दू समाज संगठित हो कर खड़ा हो जाए तो इस देश में हिन्दू अस्मिता से खिलवाड़ करने की सेकुलर मानसिकता ढह जाएगी। जम्मू के हिन्दुओं की संगठित शक्ति ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि हिन्दुत्व ही एक ऐसा धरातल है जिस पर पूरा देश स्वाभिमान के साथ खड़ा होकर भारत की अखण्डता, राष्ट्रीय संस्कृति, गौरवशाली इतिहास, धार्मिक स्थलों, मान बिन्दुओं और सामाजिक एकता के प्रतीकों की रक्षा कर सकता है। श्री अमरनाथ धाम पर आए संकट ने पूरे भारत, विशेषतया हिन्दू समाज के स्वाभिमान को ललकारा था।

सर्वविदित है कि जम्मू कश्मीर की कांग्रेस गठबंधन वाली सरकार ने मंत्रिमंडल के एक सर्वसम्मत निर्णय के आधार पर श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड को बालटाल (कश्मीर) में 800 कनाल जमीन अस्थाई रूप से दो महीने के लिए दी थी। इस जमीन पर देश विदेश से आने वाले लाखों शिवभक्तों की सुविधा के लिए अस्थाई आवासों व सुविधाओं का निर्माण होना था। यात्रा की समाप्ति के बाद यह जमीन प्रदेश के वन विभाग को वापस करने की शर्त भी श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड को स्वीकार थी। जमीन का किराया ढाई करोड़ रुपया भी श्राइन बोर्ड ने सरकार को देना स्वीकार कर लिया था। प्रदेश सरकार ने यह जमीन प्रदेश की विधान सभा द्वारा बनाए गए श्राइन बोर्ड एक्ट के तहत गठित श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड को जब दी थी तो उस समय कश्मीर

**कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू करना, आतंकवादियों को हथियार छोड़ने के नाम पर सरकारी नौकरियां देना, बार-बार देशद्रोही गुटों से बात करना और जम्मू के देशभक्त लोगों को उनके संवैधानिक अधिकारों से वंचित करके मुस्लिमबहुल कश्मीर को ज्यादा हक देना इत्यादि ऐसी बातें हैं जो कांग्रेसी सरकारों की मुस्लिम तुष्टीकरण की परिचायक हैं। जम्मू के लोगों ने पहली बार ऐसी सरकार को ना केवल झुकाया है बल्कि उसे हिन्दू स्वाभिमान और राष्ट्रीय संस्कृति का सम्मान करना भी सिखाया है।**

केन्द्रित सभी राजनीतिक दल खामोश रहे। यहां तक कि महबूबा मुफ्ती की अध्यक्षता वाली पीडीपी तो सरकार के इस फैसले में शामिल थी। उस समय नेशनल कांफ्रेंस, जनतांत्रिक मोर्चा और कई छोटे राजनीतिक दलों ने हिन्दुओं के धार्मिक मामले में व्यवधान डालना उचित नहीं समझा था।

परन्तु हिन्दुत्व और भारत राष्ट्र के साथ जुड़ा हुआ यह सरकारी फैसला अराष्ट्रीय तत्वों को बर्दाश्त नहीं हुआ। पाकिस्तान समर्थक हुर्रियत कांफ्रेंस, मुस्लिम लीग और आतंकवादी संगठनों को भारत और हिन्दुत्व विरोध का मौका मिला। इन सभी संगठनों ने श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड को कश्मीर में जमीन देने का विरोध शुरू कर दिया। इन्हें मजबूत होते देख कर पीडीपी को अपने वोट बैंक की चिंता हुई। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती, पीडीपी के संरक्षक मुफ्ती मोहम्मद सईद, पूर्व मुख्यमंत्री मुजफ्फर बेग इत्यादि सभी कट्टरपंथी नेताओं ने जमीन वापस लेने का शोर मचा दिया। उस अलगाववादी षडयंत्र के आगे प्रदेश और केन्द्र की सरकारों ने घुटने टेके और नवनियुक्त राज्यपाल एन.एन. वोहरा ने बिना किसी नियम-कानून का ध्यान रखते हुए जमीन प्रदेश सरकार के वन विभाग को वापस कर दी।

इधर जम्मू के हिन्दू समाज सहित सभी देशभक्तों ने कश्मीर में उभरे देशद्रोह के विरुद्ध आवाज उठाई। चालीस से ज्यादा समाजिक संगठनों ने मिलकर श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति का गठन किया और जमीन वापस मिलने तक संघर्ष छेड़ दिया। केन्द्र सरकार के इशारे पर राज्यपाल महोदय ने संघर्ष को फेल करने के लिए अत्याचारों के सभी रिकार्ड तोड़ दिए। लम्बा कर्फ्यू, लाठीचार्ज, अश्रुगैस, गोलियों और गिरफ्तारियों से जम्मू के लोगों को हताश करने की कोशिश की गई। लेकिन निरंतर चले आंदोलन में 13 युवक शहीद हुए, 1700 लोग घायल हुए, 2900 नेता गिरफ्तार हुए। 950 पर मुकदमे चले। बच्चे, महिलाएं, वृद्ध सभी उस संघर्ष में शामिल थे। पुलिस के आंकड़ों की मानें तो जम्मू संभाग की कुल आबादी लगभग 37-38 लाख में से सत्याग्रह आंदोलन में से 13.5 लाख लोगों ने गिरफ्तारी दी जिसमें 6.5 लाख महिलाएं थीं, 4.5 लाख पुरुष और 2.5 लाख बच्चे शामिल थे। यानी जम्मू का हर तीसरा व्यक्ति इस आंदोलन में गिरफ्तार हुआ था। अंत में सरकार झुकी और श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड के सभी अधिकार वापस किए गए। जमीन पर अस्थायी ढांचे बनाने की अनुमति दी गई। सभी मुकदमे वापस लेने की घोषणा हुयी। सरकार ने अपनी भूल स्वीकार की और जम्मू के देशभक्त लोग शांत हुए।

मगर इस सबके बावजूद सरकार ने कश्मीरी अलगाववादी संगठनों को खुश करने का भी एक प्रयास किया। जम्मू के लोगों को अपनी विजय के उपलक्ष्य में रैली नहीं करने दी। पूरे जम्मू संभाग में फिर से कर्फ्यू लगा दिया गया। जबकि श्राइन बोर्ड से जमीन वापस लेने पर कश्मीर के लोगों को 'नमाजे शुक्राना' की ना केवल अनुमति ही दी गई थी, बल्कि सरकारी कर्मचारियों और सादे वेषधारी पुलिस कर्मियों ने इसकी व्यवस्था भी की थी।

बहरहाल, इस आंदोलन की सफलता से सिद्ध हुआ कि देश के हिन्दू धार्मिक स्थल, तीर्थ यात्राएं, मान बिन्दु, महापुरुष आदि हिन्दू समाज को संगठित करने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। श्री अमरनाथ धाम ने समस्त हिन्दू समाज की भावनाओं को प्रखरता से उभारने, राष्ट्रीयता को जाग्रत करने का कार्य किया है। संभवतया पिछले 61 वर्षों में यह पहला अवसर है जब कांग्रेसनीत सरकार हिन्दुओं के किसी सवाल पर झुकी हो। कांग्रेस सरकारों ने सदैव ही मुस्लिम तुष्टीकरण पर आधारित वोट बैंक की घटिया राजनीति को ही अपनाया। राष्ट्रहित को दरकिनार करते हुए कांग्रेस ने पिछले 61 वर्षों में राष्ट्रवादी शक्तियों को दबाने की कोशिश की। कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू करना, अलगाववादी संगठनों को भारत विरोध की खुली छूट देना, आतंकवादियों को हथियार छोड़ने के नाम पर सरकारी नौकरियां देना, बार-बार देशद्रोही गुटों से बात करना, पाकिस्तान समर्थक तत्वों को अन्य भारतीय नागरिकों के समान अधिकार देना और जम्मू के देशभक्त लोगों को उनके संवैधानिक अधिकारों से वंचित करके मुस्लिमबहुल कश्मीर को ज्यादा हक देना इत्यादि ऐसी बातें हैं जो कांग्रेसी सरकारों की मुस्लिम तुष्टीकरण की परिचायक हैं। जम्मू के लोगों ने पहली बार ऐसी सरकार को ना केवल झुकाया है बल्कि उसे हिन्दू स्वाभिमान और राष्ट्रीय संस्कृति का सम्मान करना भी सिखाया है।

■

# दुआ करो – ये आवाज दूर तक पहुचे

– सलीम खान –

इस विशय पर लिखने का इरादा नही था। मगर एक ऐसी खबर आई जिसकी वजह से मैं अपने आपको रोक नही सका। अभी कुछ दिन पहले 31 मई को दिल्ली में रामलीला मैदान में कुछ मुस्लिम जमाते और कुछ अमन–पसन्द लोग एक रैली में शरीक हुए और कुरान व हदीस का हवाला देते हुए आतंकवाद की बढ़ती आग की सख्त निंदा की। कहा गया कि इस्लाम आतंकवाद के खिलाफ है। आतंकवाद से लड़ने के लिए इसने जन्म लिया है। फतवे में यह भी कहा कि हर मुसलमान को यह ताकीद करते हैं कि आतंकवाद के खिलाफ की इस जंग में सब शामिल हो जाएं । यह एक बहुत अच्छी शुरूआत है और इसकी आवाज बहुत दूर तक पहुंचेगी और सुनाई देगी । इससे पहले भी कई फतवे दिए गए हैं । वो क्यो और कहां से आए, यह जानना मुश्किल है। किसको फतवा देने का इख्तियार है, वो इख्तियार किसने दिया है – उसकी क्या अहमियत है वो जानना भी इतना ही मुश्किल है । मगर इस फतवे की अहमियत इसलिए है क्योंकि यह सबने मिलकर दिया है और कुरान और हदीस के हवाले से दिया है ।

**हर मुसलमान को यह ताकीद है कि आतंकवाद के खिलाफ की इस जंग में सब शामिल हो जाएं। यह एक अच्छी शुरुआत है और इसकी आवाज बहुत दूर तक सुनाई देगी ।**

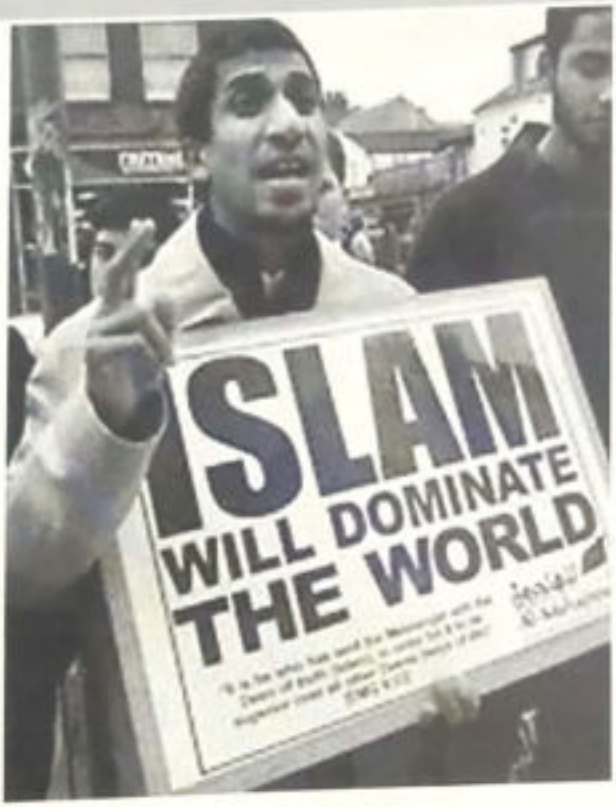


पिछले साल मेरे बेटे सलमान खान को मुम्बई में लालबाग के गणपति मंडल से गणपति उत्सव में शामिल होने की दावत दी गई । सलमान वहाँ गया और शाम की आरती में शामिल हुआ । उसको बार–बार टी.वी. चैनलों ने दिखाया भी । बस फिर क्या था, दूसरे दिन फतवों की बारिश शुरू हो गयी और वर्डिक्ट दिया गया कि आज के बाद सलमान मुसलमान नही है । उसे इस्लाम से निकाला जाता है। मै पूछता हूँ कि इससे पहले उसे इस्लाम में दाखिल किसने किया था और कब किया था, जो यह मेम्बरशिप खारिज कर दी गई ।

क्या यह लोग जानते है कि उसकी मां एक महाराष्ट्रियन हिंदू है और सलमान का एबिलिकल कॉर्ड उसकी मां के धर्म से जुडा हुआ है । उसकी मां अपने अपने घर से रूखसत लेकर इस घर मं आई तो जरूर, मगर अपने मां–बाप, भाई–बहन, रिश्तेदार और अपने धर्म को छोडकर नहीं। सलमान ने अपनी मां के धर्म की इज्जत करना उसकी गोद में सीखा है। यही हर मजहब सिखाता है । मुझसे किसी ने पूछा – आप लोगों का आखिर मजहब क्या है? मैने बताया कि जब कार का जोर से ब्रेक लगता है और हम किसी खतरनाक एक्सीडेंट से बाल–बाल बचते हैं, तो मेरे मुंह से बेसाख्ता निकल जाता है – अल्लाह खैर । मेरी बीवी के मुंह से निकलता है – अरे देवा । और मेरे बच्चों के मुंह से साथ–साथ निकलता है – ओह शिट । यहां हमारी फैमिली के नेशनल इंटीग्रेशन का एक छोटा सा फार्मूला है। इस्लाम के माने हैं अमन और शांति । भला बताइए कि जिस मजहब मे मिलने पर अस्–सलामो–अलैकुम कहा जाता है और जवाब मिलता है वालेकुम–अस्–सलाम यानी खुदा तुम्हें शांति से रखे और

प्रोटेक्ट करे, वो क्या वायलेंट मजहम हो सकता है? बिस्मिल्लहा ईर्र रहमान निर्र रहीम माने है शुरू करता हूँ उस खुदा के नाम से जो रहमान है, रहम करने वाला और मेहरबान है मेहरबानी करने वाला इस मजहब में आतंकवाद कहां से और क्यों आ गया ? उसकी वजह है गलत तालीम।

दुनिया में हर मुसलमान अपने मुल्क के संस्कारों से जुड़ा हुआ है । चीन का मुसलमान चीनियों की तरह रहता है। उसका खाना–पीना, रहन–सहन सब चीनियों की तरह है। इसी तरह मलेशिया का मुसलमान और इसी तरह रशिया का मुसलमान देखने में रशियन लगते हैं । सिर्फ हिन्दुस्तान के मुसलमान ने अपनी एक ऐसी पहचान बनाई है जिसका मूल कहां है, वो आज तक समझ में नही आया और इसलिए इस देश में वो अलग नजर आता है । एक पूर्व विदेश मंत्री सलीम शेरवानी ने मुझसे एक दिन कहा कि मुसलमान की पहचान अब उसका अमल नही है बल्कि उसकी पहचान है छोटे भाई का पायजामा और बड़े भाई का कुर्ता । दाढ़ी रखना सुन्नत है मगर बेतरतीब दाढ़ी नही । ये वो जो कपड़ा पहनता है उस हुलिए का इस्लाम में कोई जिक्र नहीं । किताबों में यह कहा गया है कि कपड़ा साफ–सुथरा और शाइस्ता होना चाहिए, जो बदन को अच्छी तरह ढ़क सके। यही तो हमारे हिंदुस्तान में लिबास रहा है। आज भी गोल्डन टेम्पल में सिर को ढ़क के ही जाना पड़ता है। इस्लाम में अमल यानी करम की बहुत ताकीद की गई है । यह भी कहा गया है कि जन्नत में उसको अपने आमाल पहुंचायेंगे नमाज या रोजे नहीं। एक बिजनेसमेन हैं जिन्हे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दोस्त बनने या बनाने के काबिल नही हैं । इसलिए कि सारे दोस्तों को ही इन्होंने अपना शिकार बनाया है । रेग्युलर नमाज पढ़ते हैं, रोजे रखते है, हज भी कर आए हैं, मगर जब भी मुंह खोलते हैं झूठ ही निकलता है । दो लाख का फ्राड करके अगर मुंबई से आ रहे हैं तो मरीन ड्राइव पर ब्रिज के नीचे रूककर दो किलो ज्वार खरीदकर कबूतरों को खिला देते हैं जिसकी वजह से कबूतर इतने मोटे हो गये हैं कि अब उनसे उड़ा भी नही जाता । बेईमानी का पैसा इंसान तो छोड़िए कबूतरों से भी उनकी उडान छीन लेता है।

इस महीने की 2 तारीख को पाकिस्तान में बम ब्लास्ट हुआ। 40 से 50 लोग मारे गए और कई जख्मी हुए । ब्लास्ट की वजह थी किसी डेनिश अखबार ने प्रोफेट मोहम्मद की कुछ गलत तस्वीरें छापी थीं जो कार्टून की शक्ल में थीं । जिन लोगों का उन तस्वीरो से कोई ताल्लुक नही था, वो बेगुनाह मारे गए । मारने वाला था एक मानव बम । खुदकुशी को इस्लाम में हराम मौत करार दिया गया है। खुदकुशी करने वाले के जनाजे को भी कंधा देना मना है । इस खबर को पढ़कर एक कहानी याद आती है। एक ट्रेन में एक अंधा शख्स जिसे बिलकुल नहीं दिखता था, सफर कर रहा था । ट्रेन का डिब्बा पूरी तरह भीड़ से भरा हुआ था । भीड़ में उसकी एक आदमी से तू–तू, मैं–मैं हो गई । उस आदमी ने अंधे को एक थप्पड़ मार दिया । अंधे को गुस्सा आया, अपनी जेब से भरी हुई पिस्तौल निकाली और 6 गालियां चलाई जिसकी वजह से छह यात्रियों की मौत हो गई – मगर उन मरने वालों में वह आदमी नहीं था जिसने उसे थप्पड मारा । इस कहानी का नाम है – 'ब्लाइंड रेज' ।

मैं एक मौलवी को जानता हूँ जिनका यह ख्याल है कि जन्नत में सिर्फ कलमा पढ़ने वाला मुसलमान ही दाखिल होगा । यह करोड़ों, अरबों, बाकी के जो लोग हैं वे फिर कहां जायेंगे । वो कहते हैं हमें क्या मालूम वो खुदा जानता है । अगर अच्छे अमल करने वाले गैर–मुस्लिम क्या जन्नत में दाखिल नही हो सकेंगे ? फिर वही जवाब, हमें क्या मालूम वो तो खुदा जानता है । जितना हम जानते हैं, उतना ही बताने की हिदायत है । मैंने उनको एक बहुत बड़ी समस्या में डाल दिया। कुछ दिन पहले 'सिरोक' के पीछे समंदर के काफी अंदर एक मुसलमान लड़का और एक मुसलमान लडकी हाई टाइड में बुरी तरह फंस गये । मोहन रेडकर नाम का एक जवान लडका जो अपनी मां को रिपोर्ट देने बांद्रा गया था, टहलते हुए समंदर की तरफ चला गया और इन दोनों मुसलमान बच्चों को बचाने में अपनी जान दे दी। जब भी यह दोनों पूरी उमर तय करने के बाद इस दुनिया से रूखसत लेंगे तो उन्हें कैसा लगेगा ? हमोर बचाने वाले को जन्नत के दरवाजे पर रोक दिया ? क्या वो ऐसे जन्नत में जाना पसंद करेंगे, जो इतनी बेइंसाफी से मिलता है । आज का दौर तालीम का दौर है और सभी समुदाय कोशिश करें कि आम मुसलमान तालीमयाफ्ता होकर मुल्क की मुख्यधारा में शरीक हो। करीब–करीब पंद्रह करोड़ की जमात की अनदेखी नही कर सकते । उनकी शिरकत जरूरी है। आम मुसलमान बच्चों को ऐसे स्कूलों में भेजें जहां से ये सीखकर आएं कि काफिर खुदा के वजूद को नकारने वाले को कहते हैं, न कि हिंदू को । हिंदू तो पहाड़ों, नदियों, दरख्तों और पत्थरों में भी खुदा खोज लेता है और पूरी कायनात की इबादत करता है । बच्चे भी सीखें 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा।

(लेखक मशहूर पटकथाकार व फिल्म निर्माता हैं)

साभार : दैनिक भास्कर, 21 जून, 2008

■

# मुलाकात

## डा. पायल मग्गो
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अभाविप)

**डा. पायल मग्गो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं और दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं। विद्यार्थी परिषद् की गतिविधियां, राष्ट्रीय सुरक्षा, महंगाई, कृषि तथा शिक्षा संबंधी मुद्दों पर उमाशंकर मिश्र ने उनसे विस्तार से चर्चा की है। प्रस्तुत हैं इस चर्चा के महत्वपूर्ण अंश –**

**बांग्लादेशी घुसपैठ देश की सुरक्षा के लिए कैसे खतरा बन रही है और इससे निपटने की क्या रणनीति परिषद् के पास है?**

बांग्लादेशी घुसपैठ कहां कहां से हो रही है इसे समझने के लिए विद्यार्थी परिषद् की ओर से एक सर्वेक्षण नार्थ–ईस्ट की सीमा का किया गया था। इस सर्वेक्षण के नतीजे चौंकाने वाले थे। सीमा पर तारबंदी हुई है और सेना की चौकियां भी हैं, लेकिन इसके बावजूद भी वहां घुसपैठ हो रही है। इसके कारण जनसांख्यकीय परिवर्तन देखने को मिल रहा है। यही नहीं गाय की तस्करी का सबसे बड़ा माध्यम बांग्लादेशी सीमा बन गई है। यही कारण है कि बांग्लादेश आज सबसे बड़ा गौमांस निर्यातक बन गया है। बांग्लादेशी घुसपैठियों की एक बहुत बड़ी फौज बिहार के किशनगंज के पास स्थित एक पट्टी पर एकत्रित हुई है। यह स्थान सुरक्षा की दृष्टि से काफी संवेदनशील और महत्वपूर्ण है। अगर यहां इसी तरह से कब्जा बढ़ता रहा तो देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। विद्यार्थी परिषद् ने इस मुद्दे को गंभीरता से लिया है और अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इस घुसपैठ के खिलाफ देशव्यापी जनजागरण अभियान चलाने का निर्णय लिया है।

**बांग्लादेश के अलावा पाकिस्तान और चीन ने भी घुसपैठ का दुस्साहस किया है, इस पर भी कुछ चर्चा हुई है?**

इन विषयों पर समय समय पर चर्चा विद्यार्थी परिषद् की शीर्षस्थ बैठकों में होती रहती है, क्योंकि सीमाओं का सुरक्षित नहीं होना, देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक चुनौती के रूप में उभर रहा है। इससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। चाहे वह अरुणाचल की समस्या रही हो, तिब्बत की या फिर जम्मू कश्मीर की; हमने समय समय पर सरकार को ज्ञापन देकर ध्यानाकर्षण का प्रयास किया है।

**विद्यार्थी परिषद् तो एक छात्र संगठन है, फिर छात्रों के मुद्दों के अलावा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दों पर मंथन के लिए आगे आने में विद्यार्थी परिषद् की सोच किस तरह की है?**

हमारे संगठन का एक दर्शन है, एक विज़न है; जिसके तहत हम काम करते हैं। विद्यार्थी परिषद् छात्रों को कल का नहीं अपितु आज का नागरिक मानती है। हमारा मानना है कि छात्र समकालीन बौद्धिक वर्ग का एक हिस्सा है और समाज की समस्याएं उसकी अपनी समस्याएं हैं। इस तरह की बात को ध्यान में रखते हुए छात्रों के बौद्धिक, सामाजिक और नेतृत्व संबंधी गुणों के विकास को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी परिषद् कार्य करती है। हमारा संगठन छात्रों को सामाजिक समस्याओं से न केवल अवगत कराता है बल्कि उन्हें इस पर सोचने और निदान के लिए आगे आने के लिए भी प्रेरित करता है। इस तरह की गतिविधियां छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं। यही सोच और यही दर्शन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् को छात्र संगठनों की भीड़ से अलग करती है। छात्रों की समस्याएं फीस, हॉस्टल, प्रवेश और परिणाम जैसी समस्याएं भी मुद्दा हैं, जिन पर स्थानीय स्तरों पर काम होता है, लेकिन हम छात्रों को इससे भी ऊपर राष्ट्रीय विषयों पर चिंतन के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे उनमें नेतृत्व विकास के अंकुर फूटने लगते हैं।

**शैक्षिक संस्थानों को उनके प्रदर्शन के आधार पर ही फंड दिया जाएगा और योजना आयोग ने फंडिंग के लिए कई शर्तें निर्धारित करने का निर्देश दिया है। इसके क्या निहितार्थ हो सकते हैं?**

यह सुनने में तो अच्छा लगता है, लेकिन इस पर विचार करना होगा कि भारत जैसे देश में क्या यह व्यावहारिक है? क्योंकि प्रदर्शन तो सुविधा के आधार पर ही निर्भर करता है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या छोटे शहरों के संस्थानों की तुलना दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे संस्थान से की जा सकती है? निश्चित तौर पर नहीं की जा सकती। ऐसे में सवाल उठता है कि इन संस्थानों के प्रदर्शन के मापदंड क्या हो सकते है और यह कितना व्यावहारिक होगा इस पर विचार करने की जरूरत है।

**पिछले काफी समय से परिषद् कार्यकर्ताओं को पुलिसिया कहर का शिकार बनना पड़ रहा है, इस तरह के टकराव के क्या कारण रहे हैं ?**

यह विडंबनापूर्ण है कि अभाविप् के साथ पक्षपातपूर्ण रवैया प्रशासन की ओर से अपनाया जा रहा है,जो कि द्वेषपूर्ण है। अभी ज्यादा समय नहीं बीता जब एनएसयूआई के समर्थकों ने इतिहास विभाग में तोड़फोड़ की और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के जिम्मेदारी भरे पद होने के बावजूद अमृता बाहरी ने एसएचओ की टोपी सरेआम उछाल दी, जो कानूनन गुनाह है। लेकिन उन पर तो सीधे सीधे केन्द्र सरकार का हाथ है, इसलिए पुलिस भी उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर पाती। जबकि राम के नाम पर यदि प्रदर्शन विद्यार्थी परिषद् करती है तो उसके कार्यकर्ताओं को 20–21 दिन की जेल काटनी पड़ती है। आखिर इस तरह का रवैया पक्षपातपूर्ण नहीं कहा जाएगा तो आखिर क्या कहेंगे इसे?

**केन्द्र सरकार की शिक्षा नीति को आप किस तरह से देखती हैं?**

सरकार उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करने से हाथ खींचती जा रही है और इसके लिए धन भी मुहैया नहीं हो पा रहा है। इसके अलावा एमएनसी के कारण प्रोफेशनल कोर्सेज की तरफ छात्रों का रुझान बढ़ रहा है और सरकार भी इसे हवा देने का काम कर रही है। सरकार भी प्रोफेशनल इंस्टीट्यूट खोल रही है। इसके कारण आर्ट और साइंस के जो परंपरागत कोर्स हैं, उनसे छात्रों की रूचि खत्म होने लगी है। जिसके कारण आम छात्र अब रिसर्च की तरफ नहीं जाना चाहता। यही कारण है कि शिक्षा में अब गंभीर मुद्दों पर शोधकार्यों में कमी आती जा रही है। इससे देश का बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। यह अच्छी बात नहीं कही जा सकती। इसके अलावा शिक्षा का महंगा होना भी एक मुद्दा है। भारतवर्ष में बहुत बड़ी संख्या गरीब छात्रों की है, जिनके लिए पर्याप्त मात्रा में स्कोलरशिप भी नहीं है।

**महंगाई और कृषि समस्या पर परिषद् ने किस तरह की प्रतिक्रिया ज़ाहिर की है?**

महंगाई का निरंतर बढ़ते जाना और दूसरी ओर कृषि उत्पादन में गिरावट चिंता का विषय है। हमारी दुल मु कृषि नीति इसका मुख्य कारण है। किसानों को मूलभूत इन्पुट्स के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। बीज, फर्टलाईजर्स की किल्लत बनी हुई है। जबकि दूसरी तरफ जीन सवर्द्धित बीज परिस्थितियों को और भी गंभीर बना रहे हैं। मृदा एवं जल प्रदूषण भी एक समस्या है। परिषद् ने इस समस्या को गंभीरता से लिया है और राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इस पर एक प्रस्ताव भी पारित किया गया है।

**तिब्बत और नेपाल की उठापटक का भारत पर किस तरह का प्रभाव पड़ रहा है?**

तिब्बत में किसी तरह की हलचल का असर सुरक्षा के लिहाज से भारत के लिए हमेशा महत्वपूर्ण होता है। इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि चीन का शिकंजा तिब्बत पर कसता जा रहा है। अब तो रेल लाईन भी यहां पहुंच गई है और चीनी सैनिकों की आवाजाही यहां बढ़ रही है। ऐसे में भारत को सतर्क रहने की जरूरत है। दूसरी ओर नेपाल का ब्लू प्रिंट तो भारतीय राज्यों में नक्सलवाद के रूप में देखने को मिल ही रहा है। उल्लेखनीय है कि नक्सलवाद देश की जड़ों को खोखला कर रहा है।

**हाल में बम विस्फोटों पर विद्यार्थी परिषद् की क्या प्रतिक्रिया रही है।**

इस तरह की घटनाओं को आमतौर पर राष्ट्रीय पर्व से पूर्व दहशत फैलाने के लिए अंजाम दिया जाता है। यह एक दुखद स्थिति का दौर है। सरकार इन घटनाओं पर लगाम नहीं लगा पा रही है क्योंकि सरकार की नीति में आतंकवाद से निपटने का कोई फार्मूला ही नहीं है। उसकी गतिविधियों में आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाही की कोई मुहिम नजर ही नही आती है। आज जरूरत है कि सरकार के पास आतंकवाद के खिलाफ एक ठोस नीति हो। जिससे कि आतंक फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही हो सके। आतंकवादी किसी घटना को अंजाम देते हैं और अपराधी फिर एक बार आजाद हो जाते हैं। आखिर कब तक यह सब चलता रहेगा? घुसपैठ ने समस्या को गंभीर बनाया है। सीमा पार से हो रही घुसपैठ को शीघ्रता से रोकने की जरूरत है। ■

# राष्ट्रीय स्वायत्त शिक्षा आयोग

— अतुल कोठारी —

शिक्षा के स्वायत्ता का सिद्धांत मात्र भारत मे ही नही बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इस सिद्धांत को स्वीकार किया गया है। जब हमारे देश में शिक्षा विश्व के श्रेष्ठतम स्तर पर थी तब भी शिक्षा कभी राजनीति की चेरी नहीं रही। स्वतंत्र भारत में 1976 तक शिक्षा राज्य के अधिकर में थी। बाद में इसको समवर्ती सूची में लाया गया। आज प्रत्येक राज्य की नीति अलग–अलग है, राज्यों और केन्द्र की दिशा भिन्न है, ऐसा अनेक बार देखने को मिलता है।

वास्तव में संपूर्ण देश की शिक्षा का लक्ष्य दिशा एक होना चाहिए लेकिन हमारा इतना विशाल देश विभिन्न राज्यों की भाषा–भूषा, खान–पान, रहन–सहन इत्यादि में बहुत सारी विविधताएँ हैं। वैसे भी विविधता में एकता में हमारा पूर्ण विश्वास है। इस हेतु पाठ्यक्रम की कुछ प्रतिशत विषयवस्तु देशभर में समान हो, कुछ राज्य एवं क्षेत्रों की आवश्यकता के अनुरूप हो। पाठ्यक्रम का कार्यकाल समान हो। कई राज्यों में बी.एड का पाठ्यक्रम 1 वर्ष का है, कुछ राज्यो में 2 वर्ष का है। प्राथमिक शिक्षक हेतु पाठ्यक्रम की स्थिति भी विभिन्न प्रांतो में विभिन्न है। प्रशासनिक ढांचा कुछ प्रान्तों में कमीशनर, सैक्ट्री, डायरेक्टर का है। कुछ प्रान्तों में कमीशनर जैसी व्यवस्था नहीं है। यही स्थिति हायर एजुकेशन काउंसिल के संदर्भ में है। इसी प्रकार कुछ प्रान्तों में SSC और HSC बोर्ड अलग है। कई प्रान्तों में दोनो साथ मे है। कुल मिलाकर इस प्रकार का प्रशासनिक ढांचा समान हो सकता है क्या? और इसमें मूल बात सारी व्यवस्थाएँ विकेन्द्रीत हों।

विभिन्न प्रांतों में निजी विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अलग–2 व्यवस्थाएँ हैं। छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान जैसे प्रांतो में एक अलग कानून बना है। अन्य राज्यों में विधानसभा में प्रत्येक विश्वविद्यालय हेतु एकट पारित किया जाता है। केन्द्र सरकार ने चर्चा हेतु एक प्रारूप प्रसारित किया था। लेकिन बाद में उसको ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। वर्ष 1995 में भी केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निजी विश्वविद्यालय हेतु इसी प्रकार का प्रयास किया गया था।

शिक्षा के महत्वपूर्ण निर्णय चाहे कुलपति या विभिन्न शैक्षिक संस्थानो के उच्च पदस्थ अधिकारियो की नियुक्ति हो या पाठ्यचर्या जैसा महत्वपूर्ण विषय, शासन या प्रशासन में बैठे हुए लोग अपने राजनीतिक स्वार्थ व सुविधा के आधार पर तय कर रहे हैं ये देखने को मिलता है।

देश में विश्वविद्यालय के कुलपतियों की नियुक्तियाँ राजनीति के आधार पर हो रही हैं। अधिकतर प्रान्तों में नियुक्ति का अधिकार राज्यपाल के पास है। कुछ प्रान्तों में राज्य सरकार के हाथ में भी है। दुर्भाग्य यह है कि दोनो व्यवस्थाओं में भयानक तरीके से राजनीति चल रही है। विगत वर्षो में कई कुलपतियों को भष्टाचार, अनियमितता इत्यादि कारणों से बर्खास्त किया गया है। एक राज्य में जिस राज्यपाल ने कुलपति की नियुक्ति की थी उसी राज्यपाल के हस्ताक्षर से उसी कुलपति को हटाया गया।

विश्वविद्यालय सिनेट एवं सिंडिकेट जैसे स्थानों पर सरकारी नियुक्तियाँ की मात्रा अधिक होने के कारण स्वाभाविक रूप से विश्वविद्यालय राज्य सरकार के शिकंजे में ही रहता है। केन्द्र एवं राज्यो की सरकारो में शिक्षा कुछ मंत्रालयो में विभाजित है। चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य मंत्रालय, कृषि शिक्षा, कृषि मंत्रालय, के अर्न्तगत हैं। आई.टी.आई, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के नीचे आता है। अन्य सभी विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय में हैं। इन सभी के समन्वय की कोई व्यवस्था वर्तमान मे देखने को नहीं मिल रही है।

राज्य एवं केन्द्र स्तर पर यह अनुभव लगातार आ रहा है कि सरकार बदलने से पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम में परिवर्तन हो जाता है। वर्तमान केन्द्र सरकार का यह प्रयास महत्वपूर्ण उदाहरण है। 1999 एनडीए सरकार ने एनसीईआरटी की इतिहास की पुस्तकों की विकृतियों को दूर किया और अन्य कई प्रकार के सुधार, परिवर्तन किये जिसको उच्चतम न्यायालय ने भी मान्यता दी थी। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार शासन में आते ही तुरंत उल्टा प्रयोजन हो गया। इस प्रकार के उदाहरण विभिन्न राज्यों में भी अनेकों देखने को मिलते हैं।

देश की शिक्षा में प्राथमिक से लेकर स्नात्कोत्तर तक चिन्तन हेतु अलग–अलग संस्थान कार्यरत हैं। जैसे UGC, AICTE, NCERT, NCTE, CBSE आदि संस्थान कार्यरत हैं। इन सभी संस्थानो में आपस में संकलन एवं सामंजस्य की कोई व्यवस्था न होने के कारण शिक्षा में समग्र चिन्तन का सम्पूर्ण अभाव दिखाई दे रहा है। प्राथमिक से माध्यमिक, माध्यमिक से उच्च शिक्षा के बीच में कोई ताल–मेल नहीं

है। 1968 की नीति में "शिक्षा समक्ष चुनौतियाँ" मे शिक्षा की असफलता में क्रियान्वयन को प्रमुख कारण बताया गया था। स्वतंत्र भारत में शिक्षा में सुधार हेतु राधाकृष्णन आयोग, मुदलीयार आयोग, कोठारी आयोग, शिक्षा नीति–1986 आदि आयोग एवं समितियाँ बनीं। जिन्होंने कई महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये। लेकिन राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में उसका क्रियान्वयन नही हुआ। लगभग सभी ने मूल्य शिक्षा की वकालत की लेकिन वर्तमान शिक्षा में मूल्य का सम्पूर्ण अभाव सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है। कोठारी आयोग में सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत शिक्षा हेतु खर्च करने का सुझाव 1966 में दिया था, अभी–2 ग्यारहवीं योजना में उसके आस–पास पहुँचने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन 42 वर्ष पूर्व यह स्वीकार किया होता तो शायद देश की शिक्षा की स्थिति आज कुछ अलग होती । स्वतंत्र भारत की शिक्षा में अधिकतर परिवर्तन राजनीति या किसी पक्ष की विचारधारा या स्वार्थ की पूर्ति हेतु किये जा रहे हैं। इस कारण से आजादी के 60 वर्ष बाद भी हमारी शिक्षा लक्ष्य विहीन तथा छात्र के समग्र विकास या देशोपयोगी नहीं हो रही है।

इन सभी समस्याओं के निदान हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वायत्त शिक्षा आयोग का गठन अनिवार्य हो गया है।

**आयोग के हेतु**

- शासन–प्रशासन एवं राजनीति से पूर्णरूप से मुक्त हो।
- शिक्षा का समग्रता से चिंतन हो।
- प्राचीन ज्ञान का आधुनीकरण तथा आधुनिक ज्ञान का राष्ट्रीयकरण करना।
- ज्ञानवान, भावनायुक्त तथा आध्यात्मिक समाज के निर्माण हेतु कार्य करें।
- पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की रचना देश की संस्कृति, व्यक्ति के समग्र विकास एवं देश–समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु हो।

**रचना**

- आयोग उपरोक्त हेतु की पूर्ति कर सके इस के लिये प्रसिद्ध शिक्षाविदो को मनोनीत किया जाए।
- विभिन्न क्षेत्रो के प्रतिभावान विद्वानों को इस में सम्मिलत किया जाए।
- शिक्षाविदो के साथ–2 शिक्षक, छात्र प्रतिनिधि तथा शिक्षा के विभिन्न संस्थानों के अध्यक्ष, निदेशक सदस्य हो सकते हैं।
- आयोग का गठन संसद के कानून के तहत हो।
- इस आयोग की गरिमा न्यायालय या चुनाव आयोग जैसी हो।
- आयोग का कार्यकाल कम से कम पांच वर्ष का हो।
- इसके अध्यक्ष का चयन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त खोज समिति के द्वारा हो। इस हेतु राष्ट्रपति केन्द्र सरकार के साथ–साथ प्रमुख विपक्षी दल के साथ भी विचार–विर्मश करे।
- एक प्रतिनिध सभा 51 या 101 सदस्यी हो तथा कोर ग्रुप के रूप में कार्यकारिणी का गठन हो।
- राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं जिला स्तर पर आयोग का गठन हो।

**आयोग के कार्य**

- आयोग का प्रमुख कार्य नियामक, निरीक्षण, निर्देशन, क्रियान्वयन एवं शिक्षा का समग्र चिन्तन हो।
- शिक्षा की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करके शैक्षिक संस्थानो को क्रियान्वयन हेतु सुझाव देना।
- शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या, शिक्षा देने की पद्धति, परीक्षा पद्धति, प्रवेश प्रकिया, छात्रों का मूल्यांकन एवं शिक्षा में गुणात्मकता आदि बातों का समय–समय पर निरीक्षण, मूल्यांकन एवं नवीनीकरण हेतु कार्य हो।
- विश्वविद्यालय के कुलपति, राज्य स्तर के आयोग के अध्यक्ष एवं विभिन्न संस्थानो के उच्च पदस्थ अधिकारियो का चुनाव तथा नामित करना।
- अन्य देशो की शिक्षा पद्धति का अध्ययन वहां के शैक्षिक संस्थानों के साथ शिक्षा के संदर्भ में आदान–प्रदान एवं सयुंक्त आयोजन की योजना बनाना।
- यह आयोग सरकार, निजी, अनुदान प्राप्त संस्थाऐं एवं विदेशी संस्थाऐ इन सभी पर निगरानी रखने का कार्य समानरूप से करेगा। प्राथमिक से लेकर स्नात्कोतर एवं सामान्य शिक्षा से लेकर व्यवसायिक शिक्षा तथा IIM, IIT जैसे सभी प्रकार के संस्थानो का नियमन करने का कार्य करेगा।
- सभी प्रकार के शैक्षिक संस्थानो में लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रक्रिया ठीक चले इसकी निगरानी रखना।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने भी उच्च शिक्षा हेतु स्वतंत्र विनियमन प्राधिकरण (Independent Regulatory Authority for Higher Education) का सुझाव रखा है। आयोग ने मात्र उच्च शिक्षा हेतु प्राधिकरण की बात कही है। यह प्राधिकरण मात्र उच्च शिक्षा हेतु होने के कारण शिक्षा का समग्र चिन्तन संभव नही होगा। ज्ञान आयोग के अनुसार यह प्राधिकरण सरकार एवं सरकार के विभिन्न मंत्रालयो से दूरी बनाकर स्वतंत्र रूप से कार्य करेगा। इस हेतु प्राधिकरण के सदस्यो की नियुक्ति प्रधानमंत्री द्वारा खोज समिति की सिफारिशों के आधार पर किये जाने के बदले राष्ट्रपति द्वारा खोज समिति की सिफारिशो के आधार पर की जाये यह ज्यादा उचित होगा। इस प्रकार इस प्राधिकरण को सरकार या राजनीति से दूर रखना संभव होगा।

**(लेखक शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति के राष्ट्रीय सह–संयोजक है)**

# बांग्लादेशी घुसपैठ – एक राष्ट्रीय संकट

### अशोक गुप्ता

बांग्लादेशियों ने इस देश में जितना उत्पात मचा रखा है। वह सब हमारी भलमनसाहत की वजह से है। यदि सरकार और इस देश का समाज एक बार दृढ़संकल्पित हो जाए तो इन्हें 'खदेड़' बाहर करना बहुत मुश्किल नहीं है। जयपुर का बम धमाका हो या उसके बाद देश भर में एक के बाद एक धमाके उनसे बांग्लादेश का जो तार जुड़ा है, वह जगजाहिर है। आज हम तकनालॉजी के मामले इतने आगे निकल गए हैं। उसके बावजूद अपने देश में घुस आए अनचाहे लोगों को हम बाहर निकालने में कितने कमजोर पड़ जाते हैं। हमारे पास अभी बांग्लादेशियों को पहचानने के कई रास्ते हो सकते हैं, लेकिन अगर इस वक्त हम चूक गए तो यह हमारे देश में इस तरह फैल जाएंगे कि पहचानना भी मुश्किल हो जाएगा।

### संदीप गेरूला

कहीं मैंने पढ़ा है कि इस देश में बांग्लादेशियों की संख्या लाख को पार कर करोड़ों में हो गई है। कई विधानसभा, लोकसभाओं में बांग्लोदेशी वोटरों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि वे सांसद और विधायक के चयन को प्रभावित करने लगे हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बिना सियासी लोगों की मदद के इतनी बड़ी संख्या में घुसपैठिए भारत में जगह नहीं बना सकते हैं। हम इस समस्या को समझ नहीं रहे। यह घुसपैठिए भारत मां के जिस्म पर वह खाज है, जिसका इलाज नहीं किया गया तो यह कोढ़ में तब्दील हो जाएगा। कितने शर्म की बात है और चिन्ताजनक भी, एक बड़े नेता ने अपने बयान में कह दिया कि इस देश से बांग्लादेशी घुसपैठियों को बाहर करना नामुमकिन है। अब वक्त आ गया है, भारत की सरकार को जागना चाहिए, वरना यह बांग्लादेशी घुसपैठिए यूं ही बम धमाकों भारत और भारत की सरकार दोनों की नींन्द यूं ही उड़ाती रहेंगी।

### नीखिल

आज की तारीख में ही हमें सतर्क हो जाना चाहिए। कहीं ऐसा ना हो एक दिन मानवाधिकार वाले आकर खड़े हो जाएं और भारत में बांग्लादेशी घुसपैठियों के अधिकारों को लेकर हो हंगामा मचाएं। हमारे देश में दोगले चरित्र के लोगों की कमी नहीं है। बहुत सारे लोग हो सकता है, वहां भी बांग्लादेशी घुसपैठियों के समर्थन में बोलने वालों के हक में आकर खड़े हो जाएंगे। उसी तरह जैसे कुछ लोग अफजल के समर्थन में खड़े हो गए। जैसे कुछ लोग मकबूल के हिमायती बन गए। अगर यह इतने निषपक्ष लोग हैं तो इन्हें आलोक तोमर के पक्ष में भी खड़ा होना चाहिए। जिसने मोहम्मद साहब की एक विवादित तस्वीर साभार लेकर प्रकाशित की थी। जो तस्वीर इंटरनेट पर आसानी से मिल जाती है। उसके बावजूद उसे छापने के लिए उन्हें दंडित किया गया। और किसी आतंकवादी की तरह उनके साथ व्यवहार किया गया। वास्तव में यह सबकुछ बेहद शर्मनाक है।

### सनोज कानू

मैं बांग्लादश के बोर्डर पर ही रहता हूं। कुचविहार में मेखलीगंज के अंदर चेंगड़ाबंदा मेरा घर है। वहां की हालत देखकर रोने को दिल करता है। जिस तरह बड़ी संख्या में बांग्लोदेशी घुसपैठिए अंदर आ रहे हैं। यह सब बड़े सुनियोजित तरीके से हो रहा है। कमिशन पर लोगों को इधर से उधर और उधर से इधर करने वाले लोग सक्रिय हैं। इधर से उधर जाने वाले लोगों की संख्या दस फीसदी भी नहीं होगी। उधर से अनगिनत लोग इधर प्रवेश पा चुके हैं। बांग्लादशी लड़के यहां आते ही भारतीय लड़कियों को पटाने का प्रयास करते हैं। जिससे उनसे शादी बना सके। शादी के बाद उनको पहचानना मुश्किल होगा। इसलिए शायद वे ऐसा करते हैं। इसी तरह हजारों की संख्या में गाय शरहद पार ले जाई जा रही है। यह सब वहां खाने के लिए ले जाया जाता है। इन्हें पार भेजने में वे बांग्लादेशी मदद करते हैं, जो यहां आकर बस गए हैं। मैं दावे से नहीं कह

सकता लेकिन कुछ बांग्लादेशी यदि सेना प्रवेश पा चुके हों और अपने देश के लिए एजेंट के तौर पर काम करते हों तो यह बड़े आश्चर्य की बात नहीं मानी जानी चाहिए। बांग्लादेशी घुसपैठिए आने वाले समय में हमारे देश के लिए बहूत बड़ा संकट बनने वाले हैं। बांग्लादेश और नेपाल के रास्ते बड़ी संख्या में पाकिस्तानी भी भारत आ रहे हैं। क्या हमें सतर्क हो जाना चाहिए, वरना हमारी दास्तां तक ना होगी दास्तानों में।

**मान सिंह**

पिछले कई सालों से लगातार भारत में हो रही बांग्लादेशी घुसपैठ भारत के लिए एक चिन्ता का विशय बन गई है । यह सब आई.एस.आई (ISI) का भारत में मुसलमान समुदाय का विस्तार करना और भारत देश की आन्तरिक सुरक्षा को प्रभावित करना तथा ग्रेटर बांग्लादेश (Greater Bangladesh) बनाने का मुख्य उद्देश्य है ।

आज बांग्लादेशी भारत के कई स्थानों पर अपना कब्जा जमा चुके हैं। पिछले दिनों जयपुर में और पूर्वी देश के विभिन्न स्थानों पर श्रंखलाबद्ध बम विस्फोट एवं उसके बाद पकड़े गये आतंकवादियों का बांग्लादेशी होना इससे यह साफ साबित होता है कि बड़े पैमाने पर बांग्लादेशी घुसपैठियों का प्रवेश भारत में हो चुका है । अगर भारत द्वारा इसको रोकने में जल्द से जल्द कोई उचित कदम नही उठाया गया गया तो भारत देश को एक बार फिर से 14 अगस्त 1947 जैसा दिन देखना पड सकता है और देश के लिए एक बार फिर विभाजन का खतरा उत्पन्न हो जायेगा । ■

## परमाणु करार मुद्दे पर अमेरिका ने भारत को गुमराह किया हैं ?

**इस विषय पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' द्वारा परिचर्चा आयोजित है। अधिक से अधिक 500 शब्दों में अपने विचार स्पष्ट रूप से लिखकर या टाइप कराकर पासपोर्ट आकार के अपने एक चित्र के साथ 15 अक्तूबर तक प्रेषित करें।**

**सम्पादक, 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति**
**136, नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली–110001**

# ABVP in the forefront of Bihar flood Relief

In Bihar ABVP is active in flood relief activities since very first day. It has started Food Distribution Centre from 21st August at Raghopur, Supol Dist. which is an adjacent Dist to Nepal. It also started Relief Camp from 22nd at Forbeesganj; Araria Dist. Also started another Relief Camp from 23rd August at Saharsa which is another worst affected dist. The first Medial Aid Centre started on 24th at Supol town. At present (07 September 2008) ABVP is running 6 Food & Material Distribution Centres , 3 Relief Camps and Five Medical camps.

ABVP has initiated relief operations in 6 districts The Saharsa Relief camp was one of the biggest camps in which around 1500 people had taken shelter. As water level coming down some people were shifted to safer places. Now more than 800 people belonging to very interior areas are staying. Parishad is providing food medicines, clothing and bedding materials. It seems this particular camp, which is running in Sri Ramesh Jha Womens'Degree College, Saharsa may have to continue for another some weeks.

In connection with this ABVP appeals you to collect contributions from individuals, families, trusts, organizations. You can send the Cheques /DD's in favor of **"Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad "** payable at Patna or **Vidyarthi Vikas Parishad**, Patna.(Vidyarthi Vikas Parishad A/C no.1306575056, Central Bank of India, Patna) .As this bank comes under CBS you can straightly pay the amount directly from your place itself to this account. ■

# हमारा व्यक्तित्व

– विष्णुप्रकाश बड़ाया –

जिस प्रकार एक बीज में वृक्ष के सभी गुण विद्यमान होते हैं, उसी प्रकार जन्म के साथ ही हमारे अन्दर भी मानव सुलभ सभी गुण–दोष एवं क्षमतायें निहित हैं उचित वातावरण एवं संस्कार से ही हम उसमें श्रेष्ठता निखार पाते हैं। हमारा निखरा हुआ स्वरूप ही हमारा व्यक्तित्व है । व्यक्तित्व विकास के पूर्व हमारी स्थिति कुम्हार के कच्चे घड़े के समान होती है । परिवार, विद्यालय एवं समाज हम में व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं । व्यक्तित्व निर्माण में बचपन के संस्कार प्रमुख रूप से प्रभावी होते हैं। व्यक्तित्व के समग्र विकास होने पर ही जीवन में पूर्णता परिलक्षित होती है । ऐसे व्यक्ती ही परिवार की सीमाओं को लाँघकर समाज व राष्ट्र के लिए समर्पित होते हैं । देश को इन पर गर्व है ।

**व्यक्तित्व विकास के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु**

1.जीवन में सहजता, सरलता और निडरता हो – अपने स्वभाव में प्रतिक्रिया न हो । अन्दर–बाहर से एक से रहे। हम निडर तो हों किन्तु किसी को भयभीत न करें ।

2.निर्भीकता किन्तु सामन्जस्यपूर्ण – लिये गये निर्णयों को पूरा भी कर सकें । सलाह–मशवरा से काम करें किन्तु निर्णय लेने के पश्चात स्वयं ही शंकित न हों ।

3.सहनशीललता एवं दृढ़ता – दूसरे के विचारों का भी सम्मान करें । अपने विचार, सिद्धान्त एवं सत्य पर दृढ़ रहें, किन्तु विरोध का स्वर न उभरे ।

4.विनम्रता – यह आपका आभूषण है । ज्ञान के साथ विनम्रता आनी ही चाहिये। इसका प्रभाव जादू के समान होता है । विनम्रता मानों एक फल वाली टहनी है ।

5.आज्ञापालन – ऐसा करना अपने स्वभाव में हो । माता–पिता, गुरूजन व वरिष्ठजनों की आज्ञा बिना किसी दुविधा के मान लेनी चाहिये ।

6.स्वभाव में न्यायप्रियता हो – अन्याय को सामान्यतया न सहें। शांतिपूर्वक उसका विरोध करें । "अन्याय को सहना भी अन्याय करने के समान अपराध है" (महात्मा गाँधी)

7.सिफारिश न करायें – अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर अपने कार्यों को होने दें ।

8.स्वाभिमानी बनें – अपने आपको दीन–हीन न समझें । प्राप्त परिस्थिति में से आगे बढ़ने का सदा प्रयास करें ।

9.ईमानदारी और देशप्रेम का भाव हो – हम शत्–प्रतिशत् खरे रहें । "आटे में नमक" जैसे विचार से भी दूर रहें । "देश के लिये जीना और देश के लिए मरना" ही यहाँ परम्परा रही है ।

10.आदर्शपूर्ण जीवन हो – लोग आपका अनुकरण कर सकें। सत्य और शाश्वत सिद्धान्तों पर विश्वास करते हुए सदा व्यावहारिक रहें ।

11.पंक्तिबद्ध कार्य करें – इसे व्यवस्था नहीं वरन् न्यायोचित समझें । पंक्ति तोड कर आगे निकल जाना अन्याय है ।

12.सृजनात्मकता – यह व्यक्ति को जोड़ती है । परिस्थिति देखते हुए निर्माण का ही भाव हो ।

13.हम धीर, वीर और गम्भीर हों – किन्तु मृदुभाषी हों । कार्य करने में उतावलापन न हो । परिस्थितियों का साहस से मुकाबला करें । संकट में भी अपना विवेक बनाये रखें ।

14.सादगी और मितव्ययिता से काम करें । आचरण में सादगी झलके । आप स्वयं पर कम खर्च करें । ये भौतिक पदार्थ परमात्मा ने सभी जनों के लिये बनाये हैं ।

15.ब्रह्मचर्य का पालन करें । "मन वाणी और शरीर के सम्पूर्ण संयम से रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है" (महावीर स्वामी)

16.समय का पालन करें – समय हमारी चल पूँजी है । बीता हुआ समय वापिस नहीं आता है । अपने जीवन रूपी उपवन में यौवन रूपी बसंत एक ही बार आता है । संत कबीर ने कहा है – "काल करे सो आज कर" ।

17.सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कह सकने का साहस – आत्मिक बल को प्रखर करें । विनम्रतापूर्वक सत्य के आस–पास ही रहें ।

18.सेवा और त्याग भाव के बिना जीवन सफल नही है । अतः अवसर प्राप्त करते रहें ।

19.संवेदनशीलता – दूसरों के सुख–दुख में सुखी और और दुःखी होना श्रेष्ठ भाव है ।

20.मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः, अतिथि देवो भवः– के भाव श्रद्धापूर्वक जीवन में उतार सकें । इनमे परमात्मा का का दर्शन कर सकें ।

व्यक्तित्व के समग्र एवं चहुँमुखी विकास के पश्चात् भी जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम लक्ष्य लेकर कार्य करें । लक्ष्य की प्राप्ति न होने पर या असफल हो जाने पर भी हम निराश न हों। असफल हो जाना अपराध नहीं है । असफलता हमें नया अनुभव देकर जाती है, जिसमें भावी सफलता छिपी रहती है। व्यक्ति सफलता से ही आंका जाता है । बस अपना सोच ठीक रहे, अपनी दृष्टि सकारात्मक रहे । मस्तिष्क को कभी–कभी खाली भी रखें ताकि वह ठीक सोच सके । परिस्थितियाँ अथवा साधन जो भी हमें प्राप्त हों उन्हें पथ का पाथेय मानकर उनका सदुपयोग करें । बस हम अवसर न चूक जावें । जीवन में अवसर कभी–कभी ही मिल पाते हैं। जीवन में भरे–भरे रहें – रिक्त नहीं । कुछ कर सकने की इच्छा शक्ति में सजीवता एवं तत्परता बनाये रखें । नहीं देखें उनको, जो मार्ग से भटक चुके हैं, नहीं देखें उनको जिनका सोच नकारात्मक है । अपने जीवन का निर्माण स्वयं करें।

# स्नातकों को पैसा मोटा, शोधार्थियों का है टोटा

मद्रास स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स (एमएसई) के निदेशक डी. के. श्रीवास्तव इन दिनों अजीब मुश्किल से गुजर रहे हैं। वजह यह है कि मास्टर डिग्री के उनके 50 छात्रों में से एक भी पीएचडी करने में रुचि नहीं दिखा रहा है। ये छात्र उच्च शिक्षा की जगह बढ़िया नौकरियों को तरजीह दे रहे हैं। दरअसल, इस तरह के रुझान केवल एमएसई जैसे संस्थानों में नहीं देखने में आ रहे हैं, बल्कि देशभर के कई संस्थानों में अर्थशास्त्र में पीएचडी करने में छात्रों का रुझान कम होता जा रहा है। सिर्फ अर्थशास्त्र ही नहीं इसी तरह के हालात अन्य पारंपरिक आर्ट्स कोर्सेज के साथ भी देखने को मिल रहे हैं। जबकि सरकार की नीतियों ने इस परिस्थिति को और भी विकराल बना दिया क्योंकि सरकार ने खुद भी प्रोफेशनल कोर्सों को जिस तरह से बढ़ावा दिया है उससे अन्य विशुद्ध कला अथवा विज्ञान से जुड़े सब्जेक्ट्स उपेक्षित हुए हैं।

यहां तक कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकासशील मुद्दों के अध्ययन के लिए स्थापित किए गए इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च (आईजीआईडीआर) जैसे प्रीमियर इंस्टीट्यूट में भी पिछले कुछ सालों में रिसर्च करने वालों का टोटा पड़ता जा रहा है। श्रीवास्तव कहते हैं, प्रतिभावान छात्र उद्योग जगत का रुख कर रहे हैं। ऐसे में संस्थानों के सामने छात्रों को रोके रखने की चुनौती और बड़ी होती जा रही है। वैसे, अमर्त्य सेन और जगदीश भगवती जैसे अर्थशास्त्री भारत से जुड़े रहे हैं, लेकिन मौजूदा दौर में अर्थशास्त्र में अमेरिका और यूरोप के मुकाबले भारत में कम शोध हो रहा है। कुछ विशेषज्ञ शोध में छात्रों की घटती रुचि के लिए तीन बातों को जिम्मेदार मानते हैं। पहला, संस्थानों में अच्छी फैकल्टी की कमी, दूसरा छात्रों को कम स्कॉलरशिप और तीसरी यह कि पीएचडी के बाद नौकरी के सीमित अवसर होना। ऐसे में जो भी छात्र पीएचडी करना चाहते हैं, वे विदेशी संस्थानों की राह पकड़ना अधिक मुनासिब समझते हैं। इस बाबत आईजीआईडीआर के निदेशक डी. एम. नचाने बताते हैं कि विदेश में भी शोध के प्रति छात्रों की रुचि कम हुई है।

ऐसे में विदेशी संस्थान अपनी सीटों को भरने के लिए भारतीय छात्रों को निशाना बना रहे हैं। वे बढ़िया स्कॉलरशिप के जरिये भारतीय छात्रों को लुभाने में लगे हैं जबकि इस मुकाबले में भारतीय संस्थान इनके सामने कहीं नहीं टिक पाते हैं। भारतीय संस्थानों में जहां 6,000 से 15,000 रुपये प्रतिमाह तक की ही स्कॉलरशिप मिल पाती है, हालांकि कुछ मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट में अपवाद के तौर पर 25,000 रुपये प्रति माह तक भी मिलते हैं जबकि विदेशी संस्थान हर महीने 800 से 1500 डॉलर प्रतिमाह तक की स्कॉलरशिप दे रहे हैं।

इस बाबत नचाने और श्रीवास्तव जैसे लोगों की यही राय है कि छात्रों को शोध की ओर खींचने के लिए स्कॉलरशिप को बढ़ाया ही जाना चाहिए। इस मामले में एमएसई और आईजीआईडीआर जैसे संस्थान कदम बढ़ा चुके हैं, जबकि दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स (डीएसई) ने इस मामले में अपनी राय जाहिर नहीं की है।

मास्टर डिग्री कर चुके छात्रों को आमतौर पर वित्तीय संस्थानों और कॅसल्टेंसी कंपनियों में 6 से 8 लाख रुपये सालाना की नौकरी आसानी से मिल जा रही है। इसके अलावा पाठयक्रम और फैकल्टी को लेकर भी दिक्कतें बढ़ती जा रही हैं। मिशिगन यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहे अर्थशास्त्री पार्थ जे. शाह बताते हैं कि देश से बाहर जाकर मैंने जो चीजें दस साल पहले ही सीख ली थीं, वही चीजें भारत में अब सिखाई जा रही हैं। **(साभार : बिजनेस स्टैंडर्ड)**

# ABVP launched campaign against Bangladeshi infiltrators

## ABVP protest in Kolkata against Bangladeshi immigrants

Kolkata: Activists of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) staged a protest in Kolkata against Bangladeshi immigrants in the country.Scores of activists of ABVP took to streets chanting slogans to voice their resentment against the large number of illegal Bangladeshi nationals who are taking shelter in India.Holding placards and banners the activists marched down the streets of the city demanding deportation of such Bangladeshi immigrants.

The activists said, they demand these Bangladeshi immigrants be stripped of all their benefits that they are enjoying in India and sent back.There have been around 30 million Bangladeshi immigrants in India for past few years; we are staging an agitation against them. We demand that these immigrants should be identified and they should be deported from this country. Detect, delete, and deport, these are our three demands, said Sunil Bansal,The convenor of the movement.

Over the past many years, there has been a large influx of Bangladeshi nationals to India , who have crossed over illegally and have taken refuge in the country.These illegal immigrants make a living by serving as maids, servants, labourers and other such small jobs.

Many of these also enjoy the status of being Indian nationals after being issued with ration cards and identity cards.The porous border between India and Bangladesh along the northeastern region of the country provides the immigrants an easy vent for crossing over to India

## Awareness campaign against infiltrators at Siddhivinayak temple

Mumbai: ABVP organised a function outside the Siddhivinayak temple in order to spread awareness about Bangladeshi infiltrators among devotees of Lord Ganesha. They distributed pamphlets and organised gate meeting on August 11. The workers walked in the night all the way from different suburbs to Siddhivinayak Temple. Over 100 workers were involved in this activity, which was held between 11 pm to 6 am in the night of August 11 and 12.

## ABVP ups ante on Bangla migrants

Jaipur: The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) on Saturday warned the state government of attacking Bangladeshi nationals living illegally in Jaipur, if it fails to evict them before August 22, 2008. Amit Sharma, secretary,ABVP has linked recent terror attacks with the presence of Bangladeshi nationals in India. He said, "There is enough evidence to prove that the series of blast that rocked Jaipur, Ahmedabad and Bangalore had been conspired by Bangladeshi nationals illegally living in India."

Sharma has claimed to identify several slums in Jaipur which house Bangladeshi nationals. "Jyoti Nagar and Bargana slums have a large concentration of Bangladeshi nationals, living in disguised as Indian nationals. They are continuously being patronised by few local pressure groups. There are 50,000 Bangladeshi nationals living in Jaipur causing threat to the city's security," added Sharma.

Earlier in the day, the ABVP staged a demonstration at Wilfred College and Lal Bahadur Shastri College asking students to join the drive to evict illegal Bangladeshi migrants from the city.

ABVP has accused the ruling government of not taking firm action against the illegal Bangladeshi migrants, despite their suspicious role in the Jaipur blast. "We will submit a memorandum to the chief minister asking the government to evict Bangladeshi nationals before 22 August, however, if they fail to evict then we ourselves would start the eviction drive". ABVP have pointed several media reports which pointed out the hand of HuJI behind recent attacks in India.

In coming weeks, ABVP would launch a series of agitation for removal of Bangladeshi migrants and memoranda addressed to the governor, CM, the director general of police and collectors at all district headquarters next week, demanding strict action against them.

## Infiltrators threat to national security: ABVP

Cuttack: Describing Bangladeshi infiltration as a major threat to internal security of the country, Orissa unit of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad demanded to deport the infiltrators from the state forthwith. Lakhs of Bangladeshi infiltrators are staying in Kendrapara, Nawarangpur, Malkangiri, Bhubaneswar, Puri, Chilika, Ganjam, Balasore, Keonjhar and several other places. The Parishad also demanded removal of the names of infiltrators from the voters' list immediately, establishment of more tribunals for detecting, deleting and deporting infiltrators, to deploy enough force at the border area and to pressurise Bangladesh Government to check the infiltration.

Speaking at a seminar organised in Cuttack ABVP national joint organising secretary Shri B Surendran said illegal infiltration from Bangladesh has become a serious threat to the national security as well as State's internal security. He informed that the Parishad would carry out protest meetings across the State and the issue would be further debated at an all-India convention to be held at Patna on September 20 and 21. The Parishad also alleged that several terrorist incidents, including the bomb explosions in Hyderabad have been linked to Harkat-ul-Jehad e-Islami (HuJI), which operates from Bangladesh. Parishad's zonal organising secretary Bishnu Das, state organising secretary Gopinath Sahu, Suprava Jena and Jogashankar Mahaprasatha were also present at the seminar.

## ABVP launched campaign against Bangladeshi infiltrators

Amravati: Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) launched an awareness drive against the Bangladeshi infiltrators in Vidarbh region.

Its activists resorted to 'Ghantanad' (tolling of bells) here at Rajkamal Square to launch the campaign.ABVP alleged Bangladeshis were illegally entering into the country and changing the demography of states like Assam, West Bengal, Bihar and Mizoram, creating cultural, social, economical and political problems.

ABVP will be creating awareness on the issue by distributing hand bills in the colleges, organising speeches, signature drive and by sending SMSs. ■

# Detect, Delete and Deport Bangladeshi Infiltrators: Sunil Ambekar

Linking majority of the terror incidents directly with Bangladesh, ABVP claimed that over three crore Bangladeshis stay in India illegally and announced a nationwide agitation to evict them out of the country. Nearly 55-lakh stay in Assam, while 30 lakh each in Bihar and West Bengal. Maharashtra is not isolated from the problem as more than 15 lakh stay illegally in Mumbai and Thane district. "The issue is becoming serious and the government must take cognizance of it rather than appeasing them," ABVP's all-India organising secretary Sunil Ambekar said while releasing a report 'Bangladesh Infiltration in India'.

ABVP visited several border outposts across the Indo-Bangladesh border. Ambekar said that several terror incident including the blasts at Hyderabad, has been linked to HuJI, which operates from Bangladesh.Asked whether last week's blasts at Ahmedabad and Bengaluru and the recovery of live bombs in Surat have been engineered by Bangladeshis, he said, "We have come across media reports that HuJI might be involved," adding, "The ISI of Pakistan is running terror operations through Bangladesh." He said that ABVP will observe antiinfiltration week in college campus, which will conclude on August 14 as 'Sankalp-divas', where students will pledge to help the authorities to tackle the Bangladeshi infiltration problem. Subsequently, students will also write to Prime Minister asking the Central government to act strongly against the illegal Bangladeshis.

ABVP would call on Deputy Chief Minister R R Patil, who holds the home portfolio. Ambekar said out that on September 20-21, the all India students' leaders conference will be held in Patna, where a final plan would be chalked out to plan a protest in Chicken's Neck area."The policy of the government should be to detect, delete and deport," he said. ■

# ABVP favours strong action against Naxalites

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) has described the news items in a section of media about its so-called support to the Naxal outfits, as completely baseless and derogatory. ABVP condemned such media reports. In a statement Shri Suresh Bhatt, national general secretary of ABVP said instead of doing its main job of nabbing the naxalites the Maharashtra Police is trying to mislead the society. He said the ABVP has been fighting against the menace of naxalites at various places of the country for many years and many of its workers have been killed in this fight. " ABVP demands the Union Home Ministry and the Maharashtra Police to clarify these incidents and also warn the section of the media which has been airing such baseless reports to refrain from publishing such wrong news. The ABVP also appeals to the people of the country not to give ear to such rumours and unitedly fight against the naxal menace," Shri Bhatt said in a statement. ■

## Karnataka

# Students Protest Carry Over System

Thousands of students from degree colleges in Mangalore and other places in Dakshina Kananda boycotted classes on August 20 seeking the Mangalore University to revoke the restrictions on the carry-over system. At present, the university's carry-over system bars the students from appearing for the fifth semester examination without clearing all the papers of the first semester. The protesters, led by ABVP demanded that students should be allowed to take the fifth and sixth semester examinations unconditionally.

They staged a protest at Ambedkar Circle for about 45 minutes. Harish Poonja, member, national executive of ABVP, alleged that the university was dilly-dallying on the issue. ABVP had staged protests in the beginning of this year urging the university to lift the restrictions from the carry-over system. But the university had not taken any decision to this effect, he said and added that ABVP would intensify the agitation if their demand was not met by the university. He said the students in most of the colleges in Sullia, Puttur, Belthangady, Ujire, Mulky and Udupi boycotted the classes.

## Kerala

# ABVP Takes Out Protest March

Hundreds of students of Palakkad district unit of the ABVP marched to the Collectorate as part of the state-wide stir to protest against the preaching of Communism through the textbooks of schools and the sanctioning of Aligarh University Centre by the LDF Government.

The march which began from the Victoria College junction was blocked before the Collectorate by the police. At the protest meet which followed, ABVP state committee member M Aneesh Kumar delivered the main speech. ABVP district convener S Hariprasad presided over the meet.District joint convener Anoop welcomed the gathering and Arjun proposed a vote of thanks.

Aneesh Kumar stated that the LDF Government was not trying to cultivate a national feeling among students through the textbooks and instead it was encouraging students to be anti-religion and trying to Marxise them.

## Madhya Bharat

# ABVP Launches Agitation Against Corruption In Universites

ABVP has launched 'Bhrashtachar Hatao, Shiksha Bachao' agitation to protest "rampant corruption" in universities of the state and the Chancellor's inaction against the "corrupt and fraud" vice-chancellors.

Alleging that the Chancellor was supporting the vice-chancellors, against whom charges of corruption, criminal cases and holding of false diploma were pending, he said the Chancellor and the government remained mute spectators.

However, a signature campaign, submitting of memorandum to principals, district magistrates and chancellors and vice-chancellors would be completed.He said state Education Minister Anup Mishra had announced to constitute the Higher Education Commission but he has failed to fulfil his promise till date. He asked clarification from the Chancellor for delay in setting up of the Sanskrit University.ABVP demanded to open medical, agriculture, music universities in the state and recruitment of efficient educationists and intellectuals in all the vacant posts in the educational institutions in the state.He also demanded that elections of student unions be held under the Model Code of Conduct.

Andhra Pradesh

## ABVP activists storm collectorates

Hyderabad : Over fifty activists of the ABVP laid siege to the Hyderabad Collectorate demanding formation of a separate Telangana state before the next general elections. The agitating ABVP activists were taken into preventive custody by the police. However, they were let off later on evening.

Karimnagar: ABVP sponsored Collectorate siege programme in Karimnagar town demanding statehood for Telangana turned violent with police resorting to mild latchi-charge. Several hundreds of ABVP activists, led by its national secretary Laxman, district leaders Sharath, Swami Reddy, Madhukar, Ramana Reddy, Raji Reddy and others arrived in a procession and staged a dharna.

When the situation was going out of control, the police resorted to mild lathi-charge. There was a tussle between the police and some members sustained injuries. The police arrested several agitators.

Mahabubnagar : The police resorted to a mild lathi charge when ABVP activists tried to gate crash into the collectorate demanding separate state for Telangana region before 2009 elections. The members took out a rally and tried to enter the office of the Collector, but the police prevented them. Following an argument, the police took some of them into custody. The ABVP members staged a 'rasta-roko' near collectorate. When their request to clear the road went unheeded, the police caned the agitators and took into custody some 40 of them.

Adilabad : ABVP activists staged protests near the Collectorate and later submitted a memorandum to the District Revenue Officer K.Y. Naik.

Jharkhand

## Board Exam Toppers Shine At Prize Event

Jamshedpur : It was a day of the stars, the stars of the steel city who came down to Michael John Auditorium to attend the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) felicitation ceremony.

Class X and Class XII toppers from schools and colleges were honored for their performances in the board examinations.

Legislator Sarayu Roy was the chief guest, who inaugurated the programme with the principal of Jamshedpur Women's College, Shukla Mohanty. Roy said that students should not money making their prime objective in life rather they should be committed to their work.

"Development and destruction are two ways before an individual. It depends upon an individual which path he chooses to take," Roy added.As the prize distribution ceremony began, one could see the pride on the faces of the parents of the toppers. Plus Two (ICSE) topper (science) of Kerala Samajan Model School Rajveer Singh said: "It feels great to be one of the toppers." He thanked ABVP for organising such event which will boost the morale of the students.

Nirali Chauhan, Plus Two (intermediate) topper (science) of Jamshedpur Women's College, was proud to be the part of such an event and being felicitated by ABVP. Her father H.D. Chauhan was proud of his daughter and said: "I am confident that my daughter will do well whichever field she chooses."

Shukla Mohanty said: "Results of Jamshedpur is improving every year. I would like the students to give their best in order to make a place for themselves in the crowd." Ashok Sinha, the state president of ABVP, congratulated the students for their achievements and wished them well for their future.

## Punjab

# ABVP Condemns Serial Blasts

Ludhiana: In order to register concern over the serial blasts that rocked Bangaluru and Ahmedabad on two consecutive days, Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad (ABVP) held a peaceful demonstration in front of Arya College.

Members of ABVP from various colleges including SCD Government College, Kamla Lohtia SD College and Arya College participated in the demonstration. Speaking on behalf of the members, Navneet Chauhan, secretary of ABVP's district unit, condemned the recent serial blasts and expressed his heart-felt sympathy with the family members of the blast victims.

## Himachal Pradesh

# ABVP Gains Firm Foothold In Student Polls

Shimla: ABVP gained a firm foothold in the students' union elections, held for the Students' Central Association at Himachal Pradesh University and 84 colleges across the state.

SFI which earlier used to dominate the polls, suffered a blow in some of the prestigious colleges of Kangra, Mandi, Solan, Una and

ABVP won all the seats in Lahaul-Spiti and Kinnaur of Kullu district

Equally hit was National Students' Union of India (NSUI), a Congress-backed student body, which could not even field its panels and paved the way for an uncontested victory of the ABVP office-bearers in eight colleges. This also included a few colleges in Kangra.The NSUI drew a blank in Mandi.

In HPU, the post of vice-president was won by ABVP's Dilip Singh Negi.

In other colleges of Shimla, Government College, Kotshera, the SFI won one post, leaving the remaining for the ABVP. In Hamirpur ABVP retained its hold in other colleges in the district except Government College.

At the Government Degree College, Arki, ABVP's Punam Sharma, Preeti Gautam and Gopal Dass were declared elected as president, vice-president and general secretary, respectively.

In Subathu College, NSUI and ABVP candidates captured two posts each.

As expected, the ABVP made a clean sweep in 14 colleges of the Kangra district in the Students' Central Association polls. The SFI which had won all four seats of DAV College, Kangra, last year, failed to get even a single seat.

ABVP panel won in the local Government Degree College. ABVP won all four seats in Government Degree College, Nagrota Bagwan.

## Bihar

# Bihar students' agitation spreads

The students' agitation in Bihar, urging the State government to break the deadlock with the striking university staff, spread to districts, affecting both rail and road traffic.ABVP activists entered the Rajendra Nagar Terminal and detained trains for several hours against the police action against them and the "callousness" of the government in not entering into a dialogue with the striking employees, thereby crippling activities in nine universities and 250 constituent colleges for well over six weeks.

ABVP observed a black day, taking out protest marches and burning effigies of the Chief Minister. They demanded the dismissal of Education Minister who was responsible for the police lathi-charge in which many students were injured. ■

Massive student rally at Bhopal - 'Bhrashtachar Hatao, Shiksha Bachao' agitation to protest against corruption in universities

Flood relief camp run by ABVP at Saharsa, Bihar

Road blockade in Mangalore seeking the Mangalore University to revoke the restrictions on the carry-over system.

Police lathi charging students in front of Hyderabad Collectorate who demands formation of a separate Telangana state

Students boycotted classes and staged a "rasta roko" at Udupi (Karnataka) demanding introduction of carry-over system.

# राष्ट्रीय छात्रशक्ति

**शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका**

वर्ष : 31 अंक : 4 जुलाई – अगस्त 2008

- प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन
- विशाल प्रदर्शन :– सितम्बर
- छात्र नेता सम्मेलन :– 20–21 सितम्बर
- अ.भा. संगोष्ठी
- गोलमेज सम्मेलन :– दिल्ली